महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब,हिमाचल,गुजरात एवं मध्यप्रदेश का लोकप्रिय समाचार पत्र

RNI NO.MAHHIN/2013/49425
डाक पंजीयन सं.MH/MR-NW-251/2013-/2015
e-paper:www.srushtiagronews.com

Posted atMalad NDPO Dated of Posting
4th to 5th for (1st to15th issue)
18th to 19th for (15th to 30th Issue)

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

वर्ष : 2 अंक - 04 | मुंबई, 16 मार्च से 31 मार्च 2014 | मुल्य-2/- रुपए | पृष्ठ -8

गेहूँ में कटाई के उपरांत प्रबंधन एवं भंडारण (पेज 2 पर)

पृथ्वीराज चव्हाण का ओला प्रभावित इलाकों का दौरा

मुंबई। महाराष्ट्र के करीब 27 जिलों के कई इलाकों में बेमौसम बरसात होने और ओला गिरने से किसानों का बड़े पैमाने पर नुकसान हुआ है। शिवसेना-भाजपा द्वारा ओला प्रभावित किसानों को मुआवजा देने की मांग के चलते मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण परिस्थिति का जायजा लेने मराठवाड़ा का दौरा किया

मुख्यमंत्री ने बताया कि राज्य पर आई यह बहुत बड़ी नैसर्गिक आपत्ति है। करीब आठ लाख हेक्टर जमीन पर फसल व फल बागों को नुकसान पहुंचा है। उन्होंने बताया कि इस नैसर्गिक आपत्ति के बारे में प्रधानमंत्री और केंद्रीय कृषि मंत्री से चर्चा हुई और केंद्र की एक टीम दो-तीन दिनों में महाराष्ट्र के दौरे पर आने वाली है। कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष माणिकराव ठाकरे ने मुख्यमंत्री के दौरे से पहले किसानों को मुआवजा देने की मांग की है। उन्होंने कहा कि जिन किसानों के अनाज का नुकसान ओले की वजह से हुआ है। उन्हें प्रति हेक्टर 20 से 25 हजार रुपये का मुआवजा दिया जाये। इसी तरह जिन किसानों के फल बागों को भारी नुकसान हुआ है। उन्हें प्रति हेक्टर 50 हजार रुपये की आर्थिक मदद सरकार करे। माणिकराव ने कहा कि पिछले 50 वर्षों में महाराष्ट्र में इतने बड़े पैमाने पर ओला गिरने की यह पहली घटना है। उन्होंने बताया कि इस नैसर्गिक आपत्ति की वजह से राज्य में 17 लोगों की जान गई है। इसी तरह लगभग 800 जानवर मारे गये हैं। कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष के प्रारंभिक अनुमान के अनुसार तकरीबन 9 लाख 40 हजार हेक्टर खेती को नुकसान पहुंचा है। यह आंकड़ा सर्वे पूरा होने पर 15 लाख हेक्टर के आस-पास पहुंच सकता है।

कच्छ भुज मे लगा किसानो का मेला

कच्छ भुज मे 4 दिवसीय चलने वाले किसान मेले का शुभारम्भ उद्ध्योग कुटीर मन्त्री वासन भाई आहीर ने किया उन्होने किसानो के मेले के महत्व के बारे मे बताया उन्होने कहा यहाँ कृषक सम्रद्धशाली है! गुजरात एक कृषि प्रधान राज्य है इसलिए ऐसे मेलो का महत्व बड़ जाता है!साथ ही एस मौके पर सौराष्ट्र ट्रस्ट के अध्यक्ष दामजी भाई ,मांडवी की सांसद पूनम बेन जाट भी उपस्तिथ थे मेले मे किसानो की भारी उपस्तिथी , किसानो की जगरुकता बता रही थी !कि वह बाज़ार मे आने वाले नए उत्पाद व नयी तकनीक को लेकर कितने उत्साहित है दूसरी ओर उत्पाद कंपनियो ने बड़ चड़ कर हिस्सा लिया कृषि मेले के आयोजक प्रशान्त पटेल ने सृष्टि एग्रो के संवादाता को बताया कि सबसे उत्साह की बात यह है कि इस बार मेले मे युवाओं व महिलाओ की बड़ी तादाद मे भागीदारी ने हमे बहुत उत्साहित किया है भविष्य मे भी हम ऐसे मेले आयोजित करते रहेंगे

रबर उत्पादन में फिसला भारत

नई दिल्ली प्राकृतिक रबर उत्पादक देशों के संघ (एएनआरपीसी) के आंकड़ों के मुताबिक भारत 2013 में रबर उत्पादन के मामले में फिसलकर चीन और वियतनाम से नीचे 5वें पायदान पर आ गया है। इससे रबर बोर्ड और नीति-निर्माताओं को गहरा झटका लगा है। वर्ष 2012 में भारत चौथे स्थान पर था और इससे ऊपर थाईलैंड, इंडोनेशिया और मलेशिया थे। वर्ष 2013 में भारत का स्थान और गिर सकता था, लेकिन मलेशिया में उत्पादन में भारी गिरावट से भारत 5वें पायदान

(शेष पृष्ठ 2 पर)

सप्लाई पर लगाम से बढने लगे प्याज के दाम

नई दिल्ली किसानों के प्याज की आपूर्ति कम करने से पिछले दो सप्ताह के दौरान इसकी कीमतें रिकॉर्ड 50 फीसदी बढ़ गई हैं। हालांकि पहले कीमत उत्पादन लागत तक गिर गई थी। एशिया की सबसे बड़ी प्याज मंडी लासलगांव (महाराष्ट्र) में इसका भाव 8-10 रुपये प्रति किलोग्राम था। दो सप्ताह पहले भाव 5.50 रुपये प्रति किलोग्राम था और इसमें लगातार बढ़ोतरी हो रही है। नासिक स्थित राष्ट्रीय बागवानी शोध एवं विकास संस्थान (एनएचआरडीएफ) द्वारा घोषित मॉडल कीमत से पता चलता है कि 15 फरवरी के बाद प्याज की कीमत 50 फीसदी बढ़ी है। मंगलवार को इसका भाव 9.15 रुपये प्रति किलोग्राम था, जबकि दो सप्ताह पहले भाव 6 रुपये प्रति किलोग्राम था। हाजिर बाजार में प्याज की कीमतें दो सप्ताह

पहले 3.50 रुपये प्रति किलोग्राम थीं। किसान मंडियों में बेचने के बजाय सड़कों पर प्याज फेंकने की योजना बना रहे थे। लेकिन किसानों के आपूर्ति सीमित करने से हाजिर मंडियों में दाम सुधरे हैं। आपूर्ति पर किसानों का पूर्ण नियंत्रण है।' प्याज के ज्यादा समय तक ठीक न रहने की वजह से निर्यात मांग नहीं आ रही है। देरी वाली खरीफ सीजन की फसल की गुणवत्ता रबी जितनी अच्छी नहीं है। रबी सीजन वाला प्याज 12 महीने तक खराब नहीं होता है। इसलिए निर्यातक बड़ी मात्रा में खरीद के सौदे नहीं कर रहे हैं। देश के सबसे बड़े प्याज निर्यात हाउस में से एक के वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, 'हालिया कीमत बढ़ोतरी किसानों के सीमित आपूर्ति करने की वजह से हुई है, क्योंकि माल रोकने की उनकी क्षमता बढ़ी है। निर्यातक और बड़े खरीदार बाजार में नहीं आ रहे हैं।'

किसानों का उप-मुख्यमंत्री के काफिले पर हमला

पुणे। पिछले कुछ दिनों से बे-मौसमी बारिश और ओलावृष्टि के कहर से राज्य के किसानों का करोड़ों का नुकसान हुआ है। उप-मुख्यमंत्री अजित पवार अहमदनगर जिले में ओलावृष्टि ग्रस्त इलाके का मुआयना करने पहुंचे थे इसी दौरान उनके काफिले पर मनसे कार्यकर्ता और नाराज किसानों ने जमकर पथराव किया। उप-मुख्यमंत्री

पवार ओलावृष्टि ग्रस्त इलाकों के दौरे पर है।

किसान हुए बर्बाद

पुणे। महाराष्ट्र के पुणे और आसपास के शहरों में पिछले 2 दिनों के दौरान तूफानी बारिश और ओलावृष्टि का कहर देखने को मिला है। भीषण ओलावृष्टि के चलते जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। खेतों में खड़ी फसल बर्बाद हो गई। कहीं पर पेड़ गिरे तो कहीं पर बिजली के खंभे गिर जाने से बिजली चली गई। ओलावृष्टि के कारण कई जानवरों की मौत हो गई। पश्चिम

विदर्भ में भीषण ओलावृष्टि ने एक युवक की जान ले ली और

(शेष पृष्ठ 2 पर)

बासमती चावल का निर्यात 10% बढे के आसार

नई दिल्ली बेहतर शिपमेंट 38 लाख टन बासमती का निर्यात हो सकता है चालू वित्त वर्ष में 34 लाख टन निर्यात रहा था वित्त वर्ष 2012-13 के दौरान 30 लाख टन चावल निर्यात सौदे हो चुके हैं पहले दस माह में 27 लाख टन निर्यात सौदे हुए थे पिछले साल समान अवधि में चालू वित्त वर्ष 2013-14 में बासमती चावल के निर्यात में 9.8 फीसदी की बढ़ोतरी होकर कुल निर्यात 38 लाख टन होने का अनुमान है। एपीडा के अनुसार चालू वित्त वर्ष

(शेष पृष्ठ 2 पर)

तहसील व विकास खण्डस्तर पर संवादाताओं की आवश्यकता

मुंबई से प्रकाशित प्रमुख हिन्दी कृषि पक्षिक समाचार पत्र सृष्टि एग्रो उपरोक्त राज्य के विकास खंड एंवम तहसील स्तर पर संवादाता नियुक्त करने है. संवादाता बनने के लिए कृषि विकास की जानकारी एंवम ग्रामीण कृषि से सम्बन्धित होना अति आवश्यक है!कृषि विषय के जानकार व कृषि आदान से जुडे व्यक्तियों को विशेष प्राथमिकता दी जाएगी !संवादाता की नियुक्ति कमीशन आधार पर होगी , संवादाता का मुख्य कार्य सृष्टि एग्रो के अधिक से अधिक सदस्य बनाना व विज्ञापन लेना रहेगा

अपने आसपास की घटनाओं पर नज़र रखना,व उसका समाचार सृष्टि एग्रो में भेजना प्रमुख दायित्व मे शामिल रहेगा अगर आप उपरोक्त शती से सहमत है तो सृष्टि एग्रो से जुडने के लिए सम्पर्क करें.

022-66998360/61.
Fax: 022-66450908,
info@srushtiagronews.com

संपादकीय

कृषि संविधान

कहने को तो भारत 15 अगस्त 1947 को विदेशी दासता की बेडियों से मुक्त हो गया था किंतु वास्तव में नीतियों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ जिससे कहा जा सकता है कि मात्र सत्ता का हस्तांतरण हुआ था यानि मात्र तंत्र हमारा था किंतु उसमें से स्व के भाव का लोप था। इस कारण से हमारे स्वतंत्र भारत में विभिन्न क्षेत्रों के विकास के लिए जो नीतियां बनी वो विदेशों से प्रेरित थी और वर्तमान में दम तोड़ती दिखाई देती है। ।

1945 से आज तक मात्र 65 सालों के अल्प समय में ही भौतिकतावादी नीतियों के कारण पूरी मानवता पर संकट के बादल मण्डराते दिखाई दे रहे है, प्रकृति के अत्यधिक शोषण के कारण आज पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है, हिम गलेशियर तेजी से पिघल रहे है, समुद्रों को जलस्तर बढ़ रहा है, विभिन्न प्रकार के जलवायुवीय परिवर्तन हो रहे है, कई प्रकार के जीव-जंतु विलुप्त हो चुके है, फसलों के उत्पादन कम होने लगे है, भारत को 15 अगस्त 1947 को खंडित स्वातंत्र्य मिला और 26 जनवरी 1950 को देश का संविधान लागू हुआ। दिनांक 11 मई 1951 को प्रथम संविधान संशेधन किया जिसे नौवें अनुच्छेद के नाम से जाना जाता है इस अनुच्छेद में प्रावधान है कि जो कानून इसमें डाल दिया जायेगा उस पर भविष्य में भारत की संसद भी विचार नहीं कर पायेगी। इसमें सर्वप्रथम जो कानून डाला गया वो था बिहार भूमि अधिग्रहण कानून। अब तक इस अनुच्छेद में लगभग 284 कानूनों को डाला जा चुका है जिनमें से 184 कानून भमि अधिग्रहण या भूमि से सम्बधित है।

सन 1834 में ईस्ट इण्डिया कंपनी द्वारा अपने औपनिवेशिक हितों को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से भूमि अधिग्रहण कानून भारत में लागू किया गया था, बाद में भारत की सत्ता ब्रिटेन को हस्तांतरित हो गई किंतु जो भूमि अधिग्रहण सम्बंधी कानून ईस्ट इण्डिया कंपनी के आधिपत्य वाले भू-भाग पर लागू था उसे पूरे भारत पर लागू कर दिया गया। भारत को आजादी मिलने के बाद बने हमारे संविधान में इसे ज्यों का त्यों लागू करने के साथ मात्र इतना ही इसमें जोड़ा गया कि अगर कोई प्रभावित इस प्रक्रिया से संतुष्ट नहीं है तो वो सक्षम न्यायालय की शरण ले सकता है।

जब भारत आजाद हुआ था तो देश की 84 प्रतिशत आबादी गांवों में और 16 फीसदी आबादी शहरों में निवास करती थी किंतु आज शहरी क्षेत्र में निवास करने वालों की संख्या बढ़कर 36 प्रतिशत व ग्रामवासियों की संख्या 64 प्रतिशत हो गई है। भारत के सकल घरेलु उत्पाद व भारतीय अर्थव्यवस्था के संचालन में खेती की अहम भूमिका है। भारतीय कृषि पद्धति को अक्षुण्ण रखने और पर्यावरण को, मानवता को, सारे भू-मण्डल को बचाने के लिए हमें सरकार पर दबाब बनाना होगा कि वो मात्र वही योजनाएं लागू करे जो भारतीय कृषि एवं भारत के हित में हो

सुरेश शर्मा-संपादक

गेहूँ में कटाई के उपरांत प्रबंधन एवं भंडारण

राकेश चौधरी

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविघालय, हिंसार (हरियाणा) – 125004

' 125004

विश्व4 में उगाई जाने वाले अनाजों में गेहूँ का स्थान धान एवं मक्का के पश्चा4त तीसरा है और यह सभी प्रमुख सभ्यताओं में स्थायी खाद्य है। 1960 के दौरान हरित क्रांति द्वारा प्रोत्साहित होने के कारण विश्वय का लगभग 36 प्रतिषत गेहूँ का उत्पादन एशिया में होता है। लगभग एक दशक से भारत का गेहूँ उत्पादन में चीन के बाद दूसरा स्थान है जिसके कारण भारत एक खाद्यान्न आत्म निर्भर देश?ा हो गया है। वर्श 2011-12 के दौरान भारत में गेहूँ का उत्पादन 93.96 मिलियन टन था जो कि पूरे विष्व में गेहूँ उत्पादन का लगभग 15 प्रतिशत है। 1950-51 के दौरान 6.45 मिलियन टन की तुलना में वर्श 2012-12 के दौरान लगभग 15 गुणा उत्पादन बढ़ा है। यद्यपि इस गुणात्मक उत्पादन ने राश्टीय खाद्य सुरक्षा को सुदृढ़ता प्रदान की है। किन्तु उचित कटाई, तदुपरांत प्रबंधन एवं भण्डारण को लेकर चिंताएं भी पैदा की हैं।

फसल पकने के साथ ही कृशको की चिंताए समाप्त नहीं होती क्योंकि कटाई के दौरान दानों के झड़नें तथा चिड.ियों, कीटों द्वारा खेत एवं भण्डार में नुकसान की आशंका रहती है। दूसरी तरफ जल्दी कटाई से दानों में नमी अधिक होती है जिसमें कवकों की उत्पत्ति एवं खाद्य गुणवत्ता कम होने की संभावना रहती है। कटाई उपरांत नुकसान को उपलब्ध तकनीकों जैसे समय से कटाई, उचित मशीनों का प्रयोग, सुरक्षित भंडारण तथा कीटों से सुरक्षा के उपाय अपनाकर कम किया जा सकता है। लेकिन इसमें सबसे बड़ी बाधा कटाई उपरांत प्रबंधन एवं भण्डारण की जानकारी का अभाव है।

कटाई:

गेहूँ का एक बड़े हिस्से की कटाई मानव द्वारा दरांती या एक विषेश प्रकार के चाकू से किया जाता है जिसमें सतह से 3-6 सें. मी. उपर से कटाई की जाती है। कटाई का समय एवं विधि कुल फसल उत्पादन के प्रमुख कारक है। कृशकों को कटाई के उपरांत दानों को उचित स्तर तक सुखाकर भण्डारण का समुचित ज्ञान है। इसमें काटे हुए गेहूँ के पौधों को छोटे-छोटे पुलिंदों में बांधकर खेत में 2-3 दिन तक सूखने के लिये छोड़ दिया जाता है। इसके विपरीत कम्बाईन या मषीन द्वारा कटाई करने से नमी वाले दानों को सुखाने का समय नहीं मिलता है। कटाई का उचित समय एक महत्वपूर्ण कारक है अतः उचित परिपक्वता समय का ध्यान रखना चाहिये जिससे दानों को झड़ने या गिरने से बचाया जा सके। विभिन्न किस्मों को अलग-अलग हिस्सों में रखना चाहिये जिससे किस्मों की शुध्दता बनी रहे। अत्यधिक एवं सीधे धूप में सुखाने से भी बचना चाहिये। इसके उपरांत दानों को साफ बोरों में भरना चाहिये जिससे भण्डारण एवं परिवहन में हानि को रोका जा सके।

कटाई उपरांत हानियाँ:

गेहूँ में कुल उत्पादन का लगभग 8 प्रतिषत भाग कटाई उपरांत नश्ट हो जाता है जो मुख्यतः जीव-जन्तुओं द्वारा होता है। उचित तरीकों को अपनाकर इन हानियों को कम किया जा सकता है। जैसे कटाई के उपरांत दानों को तुरंत सुखाना, एक समान शुश्क्ता , उचित मड़ाई एवं अन्य विधियाँ, साफ-सफाई जिससे कीटों व चिड.ियों का आक्रमण रोका जा सके, अच्छी तरह साफ बोरों से पुलींदा बनाना, वैज्ञानिक तरीकों तथा उचित नमी व कीट नियंत्रण विधियों को अपनाना, समुचित हवा का प्रबंधन तथा ढ़ेरियों को समयबध्द चरणों में हिलाना जिससे कीड़े न लगे इत्यादि। इन सब तरीको को अपनाकर प्रक्षेत्र एवं बाजार स्तर पर होने वाली हानियों को कम किया जा सकता है।

प्रसंस्करण:

प्रारम्भिक प्रक्रम जैसे, भूसि निकालना, छिलका उतारना, सुखाना और सफाई करना गेहूँ की मूल्य वर्धन के साथ-साथ कटाई उपरांत प्रबंधन एवं भण्डारण के खर्चे को कम करते है। गेहूँ को विभिन्न रूपों में उपयोग के लिये तैयार किया जाता है जैसे आटा, मैदा, सूजी, दलिया आदि। गेहूँ का आटा 5-10 अश्व श?क्ति वाले मिलों में तैयार किया जाता है, जबकि मैदा एवं सूजी को रोलर मिल से बनाये जाते है जिसमें 13 प्रतिषत चोकर/भूसी एवं 3 प्रतिषत अंकुर सह-उत्पाद के रूप में प्राप्त होते है।

प्राचीन काल से ही गेहूँ के दानों को फर्ष पर पतली परत मे फैला कर धूप में सुखाने की प्रथा चली है जो आज भी बहुत लोकप्रीय है। गर्म हवाओं वाली मषीने जैसेः बिन ड्रायर, बैच ड्रायर, एवं सतत् प्रवाह ड़ायर भी गेहूँ को सुखाने के लिये तैयार की गई है। गेहूँ की अषुध्दियों जैसेः कंकड़, पत्थर, रेत, धूल, दूसरी फसलों से अलग करके गेहूँ को साफ किया जाता है तथा बाद में गेहूँ को धूल दिया जाता है। दानों की सफाई करने के बाद, ग्लूटेन का गुण सुरक्षित रखने के लिये एक उष्णरजलिय उपचार देते है जिसमें नमी एवं ताप को साथ-साथ व्यवस्थित किया जाता है।

हमारे देष में लगभग 1100 बड़े मिल और 3 लाख छोटे आटा मिलें है जो गेहूँ को खाने योग्य उत्पादों में बदलते है। प्राथमिक प्रसंस्करण गेहूँ की खाने योग्य अवधि बढ़ाने, खराब होने से बचाने एवं मूल्य वर्धन करने की दृश्टि से महत्वपूर्ण है। दो प्रकार के आधारीय मिल पारंपरागत तैर पे चालन में है। पेहले प्रकार मे पत्थर से पिसाया जाता है जिसमें पूरा गेहूँ चोकर/भूसी एवं अंकुर के सात पिसा जाता है दसरे प्रकार मे आधुनिक रोलर मिल से पिसाई की जाती है जिसमें अधिक मात्रा में आटा प्राप्त होता है और इसमे भूसी य जर्म नहीं पाया जाता है।

प्रसंस्करण के लिये मुख्यतः दो प्रकार की मिल प्रचलन में हैं। एक पारम्परिक पत्थरों से पिसाई जिसमें गेहूँ को छिलके सहित पिसा जाता है तथा दूसरा आधुनिक रोलर आटा मिल जिसमें आटे का मुख्य भाग दाने के भ्रूणपोश के बिना छिलकों एवं भूसी में प्राप्त होता है। पिसाई के बाद उत्पाद को जल सुरक्षित थैलो में भरकर ठण्डे एवं सूखे स्थान पर भण्डार करते है। उपभोक्ताओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ने से विभिन्न प्रकार के आटे, जैसे; चना, सोयाबीन आदि की गेहूँ की आटे के साथ मिलाकर पौश्टिक अवयवों को बढ़ाया जाता है। गेहूँ के आटे में कैल्थियम काबोनेट, विटामिन ए और डी, थियामिन, रिबोफलेविन इत्यादि।

भण्डारण:

साधारण्यतः किसान अपनी उपज का 50-80 प्रतिषत हिस्सा अपने और अपने पषुओं के लिये एवं बीज के लिये रखते है। किसान अपनी उपज को भण्डार करने के लिये साधारण भण्डारों का प्रयोग करते है जो पुआल, बांस, घास, कीचड़ पोतना, ईंटों आदि के बने होते है। मुख्यतः खाने हेतू गेहूँ का भण्डारण बोरों मे भरकर कमरों, ड्रम इत्यादि मे किया जाता है या फार्म पर ढेर बनाकर रखा जाता है जहाँ उचित फर्ष तथा बंद खिड़की जिसमें दरवाजे नहीं होते। विभिन्न प्रकार के जीव, फूफंदी, चूहे, गिलहरी, कीट, पषुओं, नमी, बर्फ, वर्शा, गर्मी आदि से उपज को बचाया जा सकता है। भण्डारण संरचना आकार एवं प्रकार में विभिन्न प्रकार की हो सकती है जैसे आंतरिक, बाह्य भण्डार, भूमिगत, भूमि के ऊपर, वायुरहित संरचना इत्यादि। कुछ प्रचलित भण्डार संरचनाएं जैसे कीचड़ या मिट्टी, लकड़ी, बांस या धातुओं से बने होते है। कोठी (छोटे कमरे), बुखारी, पूसा बिन तथा पंतन कम कुठला आदि कुछ आधुनिक भण्डारण के साधन है।

अंत में यह निश्कर्श निकलता है कि उत्पादन में बढ़ोतरी के साथ-साथ उचित कटाई उपरांत प्रबंधन तथा भण्डारण के मूलभूत संस्थाओं को विकसित करने की आवष्यकता है जिससे भविश्य की राश्ट्रीय खाद्य सुरक्षा को सुनिष्चित किया जा सके।

किसान हुए....

तीन दर्जन से अधिक लोगों को घायल कर दिया। ओलावृष्टि के चलते राज्य के नासिक सांगली सोलापुर, अहमदनगर और कोल्हापुर जिले में अंगूर की फसल बर्बाद हो चुकी है। फसल जमींदोज हो जाने से किसानों को 1500 करोड़ का आर्थिक नुकसान हुआ है। जिसका असर आने वाले समय में रोजगार पर भी बड़ा असर पड़ सकता है। इस विपदा से अनार और आम की पैदावार में 50 फीसदी कमी आ सकती है। ओलावृष्टि के कहर से कपास और गन्ने की फसल भी बर्बाद हो चुकी है। विपक्ष नेता एकनाथ खड़से ने कहा है कि, 'ओलावृष्टि का संकट उत्तराखंड़ के संकट से भी बड़ा है। आर्थिक हालात सुधारने में सरकार को तत्काल कदम उठाने चाहिए। फसल को कर्ज, किसानों का बिजली बिल, और छात्रों की परीक्षाओं की फीस माफ करना चाहिए'।

किसान हुए....

पर बना रहा। पिछले वर्ष के दौरान विश्व के शीर्ष 9 उत्पादक देशों में से केवल भारत, मलेशिया और श्रीलंका के उत्पादन में ऋणात्मक वृद्धि दर्ज की गई है। वियतनाम और चीन के उत्पादन में वृद्धि चौंकाने वाली थी, क्योंकि ये देश कुछ वर्षों पहले इस सूची में काफी नीचे थे। वियतनाम में पहली बार प्राकृतिक रबर का उत्पादन 2013 में 10 लाख टन के आंकड़े से पार हुआ है। कुछ वर्षों पहले भारत उत्पादन सूची में थाईलैंड और इंडोनेशिया के बाद तीसरे स्थान पर था, लेकिन अब फिसलकर 5वें स्थान पर आ गया है। देश में वर्ष 2008 से 2013 के दौरान उत्पादकता में गिरावट आई है और यह उत्पादन में गिरावट की मुख्य वजह है।

बासमती चावल....

2013-14 के पहले 10 महीनों (अप्रैल से जनवरी) के दौरान बासमती चावल के निर्यात सौदों में 13.5 फीसदी की बढ़ोतरी होकर कुल निर्यात सौदे 30.88 लाख टन के हो चुके हैं। एपीडा के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बिजनेस भास्कर को बताया कि चालू वित्त वर्ष 2013-14 में बासमती चावल का निर्यात बढ़कर 38 लाख टन होने का अनुमान है जबकि वित्त वर्ष 2012-13 में 34.59 लाख टन का निर्यात हुआ था। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अनुसार चालू वित्त वर्ष 2013-14 के पहले 10 महीनों अप्रैल से जनवरी के दौरान बासमती चावल का निर्यात मूल्य के हिसाब से 58.84 फीसदी बढ़कर 23,517.11 करोड़ रुपये का हो चुका है। जबकि वित्त वर्ष 2012-13 की समान अवधि में 14,805.87 करोड़ रुपये मूल्य का निर्यात हुआ था। ऑल इंडिया राइस एक्सपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष एम पी जिंदल ने बताया कि ईरान की मांग कम होने से जनवरी-फरवरी में बासमती चावल के निर्यात सौदे कम हुए हैं। हालांकि आगामी महीने में निर्यात सौदों में फिर से तेजी आने की संभावना है।

कुदरती हरी साग–सब्जियॉः सुरक्षित पर्यावरण

कु0 मधु', उमा वर्मा'' एवम डा0 सिया राम विश्वकर्मा'''

बेहतर आहार (अनाज, दालें साग–सब्जी, खाद्यान आदि) हमारे स्वास्थ्य की पहली शर्त है। वर्तमान वैश्वीकरण के इस दौर में स्वस्थ और फिट रहना आज का अहम प्रश्न है। क्योंकि बदलते परिवेश में खान–पान की दिनचर्या बदल गयी है। व्यक्ति समय के अभाव में जो मिलता है, खा लेता है। नतीजा बीमारियों में बृद्धि हुई है और व्यक्ति का कार्य प्रभावित हो रहा है। आज हरी साग–सब्जियों में हरापन, रंगों का स्थाईत्व रखने के लिए तमाम कीटनाशकों व कृत्रिम रंगों का प्रयोग हो रहा है जो स्वास्थ्य समस्या में एक चुनौती बन रहा है। अतः खान पान में नियन्त्रण, सब्जियों के खरीददारी करते समय अति सावधानी, मौसमी ताजे सब्जियों को ही अपनाने जैस समन्वय हमें बीमारियों से बचा सकते है।

लगभग सभी डायटीशियंस इस बात पर एकमत है कि यदि हम अपने खान पान में अधिक से अधिक कुदरती बहुरंगी खाद्य पदार्थो को शामिल करे तो इससे हम सभी के स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण सुधार होगा। दुनियाभर के आहार विशेषज्ञ इस बात से सहमत है कि प्रत्येक रंग के खाद्य पदार्थ में अलग–अलग प्रकार के पोषक तत्व पाये जाते है। विभिन्न रंगो व पोषक तत्वों के मध्य सीधा सम्बन्ध है जैसे लाल टमाटर में विटामिन ए और एन्टी आक्सीडेन्टस (रोग रक्षक व जीवन रक्षक तत्व) पर्याप्त मात्रा में पाये जाते है। जापानियों का विश्वास है कि प्रतिदिन 25 अलग अलग रंगो के खाद्य पदार्थ को आहार में स्थान देने पर कैंसर व ह्रदय रोगों से बचाव होता है। बस्तुतः फलों–सब्जियों में जो कुदरती रंग पाये जाते है, वे फाइटोकेमिकल्स के कारण होते है। इन फलों सब्जियों का रंग जितना गहरा होगा, उतनी ही मात्रा में इनमें पोषक तत्वों के साथ–साथ रोगों से लड़ने वाले रंग तत्व भी मिलेंगे। विभिन्न रंगों के फलों व सब्जियों में जो विटामिन्स , मिनरल्स और अन्य पोषक तत्व पाये जाते है, वे शरीर के अन्दर पैदा होने वाले नुकसान देह तत्वों (फ्रीरेडिकल्स) के दुष्प्रभावों को कम करते हैं। इसका कारण यह है कि बहुरंगी फलों/सब्जियों में एंटी आक्सिडेन्टस पर्याप्त मात्रा में पाये जाते है।

हरी सब्जियां न केवल रेशे (फाइबर) का अच्छा स्रोत होती है, बल्कि वजन नियन्त्रित रखते हुए शरीर की विटामिन्स ए, सी, के, फोलेट (आयरन) और कैल्शियम की कभी भी पूरी करती है। साथ ही कई बीमारियों के खतरे से बचाती है।

' पीएच0 डी0 रिसर्च स्कालर (फूडन्यूट्रिशन) '' परास्नातक छात्रा (पादप प्रजनन), '''वरिष्ठ पौध अभिजनक, आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद–224 229 (उत्तर प्रदेश)

1. पत्तेदार सब्जियॉः पालक, मेथी, बथुआ, मूली व सरसों में मिनरल्स और विटामिन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। मेथी में कैलशियम की मात्रा बहुत ज्यादा होती है। यह हड्डियों को मजबूत बनाती है। साथ ही याददाश्त को बढ़ाने में मददगार होती है। इसके सेवन से पाचन दुरुस्त रहता है। पालक में मौजूद लौह तत्व हिमोग्लोबिन बढ़ता है। यह आंखों के लिए भी फायदे मन्द है। पथरी के रोगियों को पालक कम खाना चाहिए।

पत्तेदार सब्जियों में एन्टी आक्सिडेन्ट होते है, जो प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत करते है। और कैंसर से भी बचाते है। इनके सेवन से इन्सुलिन की मात्रा नियंत्रित रहती है जिससे डायबिटीज का खतरा भी टलता है।

2. टमाटरः

इसमें लाइकोपिन, इलेगिक एसिड और हेस्पिरीडीन सरीखे पोषक तत्व होंते है। ये पदार्थ शरीर में प्रोस्टेट कैंसर, रक्तचाप के खतरे को कम कर देते है। साथ ही टयूमर बनने और कोलेस्ट्राल का स्तर बढ़ने नही देते। इसमें विटामिन सी भी पाया जाता है जो शरीर के प्रतिरोधक क्षमता को बढाता है। टमाटर में एन्टीएजिंग तत्व पाये जाते है जिसके कारण त्वचा में मौजूद फ्रीरेडिकल्स की संख्या को कम करता है। टमाटर शरीर में नमी की मात्रा को संरक्षित रखता है।

3. गाजरः

इसमें विटामिन ए, बी, सी, कैल्शियम और फाइवर होते है जो कोलेस्ट्राल स्तर को बढने नही देते है। गाजर का जूस त्वचा को साफ करता है जिससे चेहरे पर चमक आती है, सर्दी जुकाम नही होता है। थकान व तनाव कम हो जाता है। गाजर का जूस हानिकारक जीवाणुओं को नष्ट कर देता है जिससे डायरिया नही होता है। इससे प्रतिरक्षा तन्त्र मजबूत होता है। गाजर का रस पीने से याददाशत तेज होती है।

4. ब्रोकली/गोभीः फूल गोभी में फोलिक एसिड पाया जाता है जो महिलाओं के लिए फायदेमन्द होता है। जहॉ पत्तागोभी खाने से ताजगी, विटामिन्स फाइबर की प्राप्ति व सुपाच्यता प्राप्त होती है, वही ब्रोकली गोभी (हल्के नीले रंग वाला) कई बीमारियों में कारगर सिद्ध हुआ है। यह देखा गया है कि ब्रोकली का प्रयोग पेट सम्बन्धी रोग, डायबिटीज व कैंसर के रोगियों पर लाभदायक प्रभाव छोडता है। ब्रोकली से कैंसर में ज्यादा लाभ होता क्योंकि इसमें सल्फोरोफेन नामक रासायनिक तत्व मौजूद होता है। बंद गोभी में ल्यूटिन, जिओजेंथिन, विटामिन सी, फाइबर लोवानायड आदि पोषक तत्व पाये जाते है।

5. लौकीः अति सुपाच्य लौकी का गुण किससे छुपा हुआ है। कडुवी लौकी को छोड़कर इसमें ऐसे तत्व पाये जाते है जो हृदय रोगियों को आराम दिलाता है। यह पेट सम्बन्धी बीमारी, उष्णता व कोलेस्ट्राल को कम करता है। इसमें विटामिन्स ए, बी व मिननरल, बीटाकैरोटीन पाये जाते है जो इन्जाइम्स के निर्माण में सहायक होते है। यह प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाता है।

6. करेलाः डायविटीज के मरीजों के लिए यह रामबाण है। इसमें कैलोरी काफी कम होती है। करेले में विटामिन बी–1, बी–2, बी–3, सी, मैग्नीशियम, जिंक फोलिक एसिड और आयरन पाया जाता है। करेला+टमाटर+खीरा का जूस हृदय व डायविटिज रोगियों को अति लाभप्रद होता है।

7. चुकन्दरः

इसमें पोटैशियम और मैगनीज पाया जाता है। इसमें कैलोरी कम होती है। यह त्वचा सम्बन्धी बीमारियों के इलाज में काफी कारगर है। इसको बथुआ व गाजर के साथ उबालकर पीने से हिमोग्लोबीन में आशातीत बृद्धि ऑकी गयी है। शलजम में मौजूद ग्लूकोसिनोलेटस कोलेन कैंसर के कोशिकाओं की वृद्धि को रोकता है।

8. मूलीः

यह स्वाद में उम्दा और कम कैलोरी वाली होने के साथ इसमें विटामिन सी, आयरन, पोटैशियम, बीटा कैरोटीन व फाइवर होता है। यह हृदय रोगियों के लिए भी हितकर होता है। इसके प्रयोग से पेट के कीटाणु (हानिकारक) समाप्त हो जाते है। लीवर रोगियों के लिए रामबाण है।

9. नीबूः

इसमें विटामिन सी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसके अलावा इसमें विटामिन बी, कैलशियम मैगनिशियम और कार्बोहाइड्रेट पाया जाता है। गर्मी में यह शरीर को ठण्डक देता है। यह पेट की गड़बड़ी, लीवर व डायविटीज में भी लाभकारी है। नीबू में पोटैशियम की उपस्थित के कारण हृदय रोगियों के लिए काफी फायदे मन्द है। यह प्रतिरक्षा तन्त्र को मजबूत करता है। मोटापा कम करने हेतु भी नीबू लाभ दायक बताया गया है।

10. धनियाः

धनिया की हरी पत्ती एवम् मुलायम तने को चटनी बनाये, साक–भाजी, सूप सलाद को स्वादिष्ट व पोषकतायुक्त बनाने में प्रयोग किया जाता है। औषधीय रुप से इसका प्रयोग अपच, दस्त, पेचिस, जुकाम व मूत्र विकार से सम्बन्धित रोगों में होता है। इसके वाष्शील तेल, सील बंद खाद्य पदार्थ सूप, चाकलेट, कैंडी व खुशबूदार साबुन बनाने में काम आता है।

अन्त में ऊपरलिखित साक–सब्जी के प्रयोग के साथ कुछ निम्न खास वातों पर भी ध्यान दें–

(1) सन्तुलित आहार लें।
(2) अपनी सोच सकारात्मक रखें।
(3) बुढापा रोकने में विटामिन सी की बहुत भूमिका होती है इसलिए विटामिन सी वाली साग सब्जी व फल खायें।
(4) दिन में कम से कम 10 गिलास पानी पीयें।
(5) भोजन में ताजे फल व सब्जियॉ लें।
(6) शारीरिक श्रम से जी न चुरायें।
(7) पेड पौधे लगायें इनकी देखभाल करें।

अतः पर्यावरण स्वच्छ तो जीव जगत सुरक्षित

देना बैंक जैन इरिगेशन के साथ राष्ट्रीय स्तर गठजोड़

मुंबई: देना बैंक, भारत के प्रमुख बैंकों में से एक, सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली, नियंत्रित जलवायु ग्रीन और पॉली हाउस, पाइपिंग के निर्माण और बिक्री में लगे हुए, जैन इरिगेशन सिस्टम्स लिमिटेड के साथ एक राष्ट्रीय स्तर टाई अप में प्रवेश किया प्रणाली, सौर पंप और टिशू कल्चर पौधों. टाई अप किसानों उपलब्ध जल संसाधनों का न्यूनतम उपयोग से सिंचाई के तहत उनके रकबा बढ़ाने में मदद मिलेगी. जैन इरीगेशन यह किसानों की एक बड़ी संख्या में पानी की बचत के तरीके के प्रयोग के रूप में आने वाले महीनों में इस गठजोड़ के माध्यम से वित्त पोषण किया जाएगा कि उम्मीद है आदि सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली, फसल प्रबंधन सेवाओं के लिए एक आवश्यकता के साथ पात्र किसानों की पहचान करने में बैंक की सहायता करेंगे ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई पद्धति की तरह, विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है. श्री मनोज लोढ़ा प्रेजिडेंट (वित्त) और जैन इरिगेशन के श्री राजीव देशमुख वरिष्ठ उपाध्यक्ष (बैंकिंग और वित्त) श्री सीएस मीणा, जीएम देना बैंक और सुश्री जया चक्रवर्ती, उप जीएम के साथ 7 मार्च 2014 पर समझौता ज्ञापन विमर्श किया

जीएम फसलों का ट्रायल रोकना ठीक नहीं: आईसीएआर

नई दिल्ली कृषि विशेषज्ञों ने कहा- अवैज्ञानिक तरीके से विरोध हो रहा है नई तकनीक का ट्रालय करने से पहले ही जेनेटिकली मॉडिफाइड (जीएम) फसलों को हानिकारक बताना सही नहीं है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के महानिदेशक डॉ. एस अय्यप्पन ने कहा कि जब बड़ी आबादी वाले तमाम विकासशील देश जीएम फसलों पर अनुसंधान कर रहे हैं, तब भारत में जीएम फसलों के ट्रालय को रोकना उचित नहीं है। उन्होंने कहा कि जीएम फसलों का, जो विरोध हो रहा है, वह विज्ञान के तौर पर नहीं, बल्कि कुछ दूसरे डर से हो रहा है। अवैज्ञानिक दुराग्रहों के कारण जीएम फसलों का विरोध नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि देश की बढ़ती आबादी और जलवायु परिवर्तन के बढ़ते खतरों को देखते हुए खाद्यान्न संकट का हल निकालना जरूरी है। जब बड़ी आबादी वाले ज्यादातर विकासशील देश जीएम फसलों पर अनुसंधान कर रहे हैं, तब भारत में उस पर रोक लगाना उचित नहीं होगा। वैसे भी विश्व में अभी तक एक भी प्रमाणिक या फिर वैज्ञानिक रिपोर्ट नहीं आई है, जिसमें जीएम फसलों से मनुष्य, जानवर या फिर पर्यावरण को नुकसान होने की बात पता चली हो। देश में कृषि पर निर्भरता लगातार बढ़ रही है तथा बीजों में वैज्ञानिक ढंग से सुधार की लंबी परंपरा रही है, जिससे पैदावार बढ़ाने में लगातार मदद मिली है। उन्होंने कहा कि जीएम फसलों के उपयोग में सतर्कता जरूरी है, लेकिन इनसे मुंह मोड़ लेना बुद्धिमानी नहीं है। अगर परीक्षण ही रुक गए, तो फसलों की सुरक्षा से जुड़े प्रयोगों पर भी विराम लग जायेगा। ऐसे में वह समय आ ही नहीं पायेगा, जब जीएम फसलों को सुरक्षित मानकर उनकी खेती की जायेगी। जीएम फसलों से जिंसों की प्रति हैक्टेयर उत्पादकता बढ़ेगी, इसलिए इससे बड़े किसानों के साथ ही छोटे किसानों को भी फायदा होगा। हाल ही में केंद्रीय कृषि मंत्री शरद पवार ने भी जीएम फसलों की वकालत करते हुए कहा था कि कृषि उत्पादन बढ़ाने, कीटों, बीमारियों और फसल खराब करने के अन्य कारकों से लडने के लिए जीएम फसलें जरुरी हैं

चीनी मिलों को सब्सिडी

नई दिल्ली सरकार ने चालू वित्त वर्ष 2013-14 में फरवरी व मार्च के दौरान रॉ शुगर निर्यात पर 3300 रुपये प्रति टन सब्सिडी देने के लिए अधिसूचना जारी कर दी है। आर्थिक मामलों की कैबिनेट कमेटी (सीसीईए) ने चीनी के मूल्य कम होने से आर्थिक तंगी से गुजर रही मिलों को मदद देने के लिए फरवरी माह में इस प्रस्ताव को मंजूरी दी थी। अधिसूचना में कहा गया है कि फरवरी और मार्च में रॉ शुगर निर्यात पर सब्सिडी 3300 रुपये प्रति टन होगी। प्रत्येक दो महीने के बाद सब्सिडी रेट की समीक्षा होगी। सब्सिडी की दर रुपया-अमेरिकी डॉलर के औसत एक्सचेंज रेट के आधार पर तय की जाएगी। हालांकि इस सब्सिडी के लिए मात्रात्मक सीमा 40 लाख टन रहेगी। मार्केटिंग वर्ष 2013-14 और 2014-15 में उत्पादित रॉ शुगर इसी अवधि में निर्यात करने पर सब्सिडी दी जाएगी। रॉ शुगर का उत्पादन करने वाली मिलें स्वयं अथवा निर्यातकों के जरिये इसका निर्यात करती हैं तो उन्हें सब्सिडी मिलेगी। शिपमेंट की तारीख के आधार पर सब्सिडी की दर तय होगी। दुनिया के दूसरे सबसे बड़े चीनी उत्पादक भारत में पिछला स्टॉक बड़ी मात्रा में बचा है।

खाद्य तेल आयात बढ़ेगा पर पाम तेल में कमी

नई दिल्ली दलते समीकरण पाम तेल व सोया तेल के मूल्य में अंतर कम हुआ सोया तेल आयात करने में भारतीय खरीदारों की दिलचस्पी मलेशिया व इंडोनेशिया में सूखे के चलते पाम तेल उच्च स्तर पर इस साल पाम तेल आयात 6 फीसदी कम होने के आसार

सोया तेल और पाम तेल के मूल्य में अंतर कम होने की वजह से भारत का पाम तेल आयात घटने की संभावना है। अनुमान है कि अगले अक्टूबर में समाप्त होने वाले मार्केटिंग वर्ष में आयात छह फीसदी कम रह सकता है। भारतीय खरीदार मूल्य में अंतर कम होने के कारण सोया तेल आयात करने में ज्यादा दिलचस्पी ले रहे हैं। कारोबारियों का अनुमान है कि 17 माह के उच्चतम स्तर पर पहुंचने मलेशियाई पाम तेल के दाम भारत की मांग कम रहने से सुस्त पड़ सकते हैं। यहां एक इंडस्ट्री कांफ्रेंस के मौके पर एक व्यापारी ने कहा कि क्रूड पाम तेल 940-950 डॉलर प्रति टन (लागत, बीमा व भाड़ा खर्च) पर भारत में सप्लाई करने का ऑफर किया जा रहा है। पाम तेल का भाव सोयाबीन के डिगम तेल के बराबर ही चल रहे हैं। आमतौर पर पाम तेल के दाम सोयाबीन के मुकाबले करीब 100-150 डॉलर प्रति टन कम रहते हैं। लेकिन पिछले एक माह के दौरान पाम तेल के दाम करीब दस फीसदी बढ़ चुके हैं। बुर्शा मलेशिया डेरिवेटिव्स में मई डिलीवरी क्रूड पाम तेल के दाम 2860 रिंगिट का उच्चतम स्तर छू गए। यह स्तर सितंबर 2012 के बाद का सबसे ज्यादा है। बाद में भाव 2836 रिंगिट (870 डॉलर) प्रति टन पर रह गए। पाम तेल में भारी तेजी आने की इस वजह से मूल्य में अंतर काफी कम हो गया है। मुंबई की ब्रोकरेज फर्म सनविन ग्रुप के चीफ एक्जीक्यूटिव संदीप बाजौरिया ने कहा कि इंडोनेशिया और मलेशिया में सूखे के हालात हैं। इससे पाम तेल की तेजी को बढ़ावा मिल रहा है।

गेहूं की खरीद में आढ़तियों को मिलेगा कम कमीशन

नई दिल्ली कटौती पंजाब और हरियाणा के आढ़तियों को पहले की तरह ही 2.5 फीसदी कमीशन मिलेगा। लेकिन मध्य प्रदेश और राजस्थान जैसे अन्य राज्यों में मध्यस्थ को तय कमीशन 33.75 रुपये प्रति क्विंटल की दर से मिलेगा केंद्र सरकार ने खाद्य सब्सिडी में कटौती करने के लिए कदम उठाने शुरू कर दिए हैं। इसी कड़ी में खाद्य मंत्रालय ने रबी विपणन सीजन 2014-15 में गेहूं की खरीद में आढ़तियों को दिए जाने वाले कमीशन में कटौती कर दी है। हालांकि पंजाब और हरियाणा के आढ़तियों को पहले की तरह 2.5 फीसदी कमीशन ही मिलेगा, लेकिन अन्य राज्यों मध्य प्रदेश और राजस्थान आदि में मध्यस्थ को तय कमीशन 33.75 रुपये प्रति क्विंटल की दर से मिलेगा। कि गेहूं की खरीद में आढ़तियों को दिया जाने वाला कमीशन फीसदी के आधार पर नहीं, बल्कि तय आधार पर मिलेगा। रबी विपणन सीजन 2013-14 के लिए कमीशन को पिछले साल के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के आधार पर तय किया है। पिछले रबी विपणन सीजन में गेहूं का एमएसपी 1,350 रुपये प्रति क्विंटल था। इसके आधार पर 2.5 फीसदी की दर से कमीशन 33.75 रुपये प्रति क्विंटल होता है। मालूम हो कि अप्रैल से शुरू होने वाले नए रबी विपणन सीजन 2014-15 के लिए केंद्र सरकार ने गेहूं का एमएसपी 1,400 रुपये प्रति तय किया हुआ है जिसके आधार पर 2.5 फीसदी की दर से कमीशन 35 रुपये प्रति क्विंटल होता है। पंजाब और हरियाणा में गेहूं की सरकारी खरीद पूर्व की भांति 2.5 फीसदी कमीशन के आधार पर ही होगी, क्योंकि इन राज्यों के मंडी कानून में यह प्रावधान किया गया है।

इसलिए पंजाब और हरियाणा के आढ़तियों को रबी विपणन सीजन 2014-15 में गेहूं की खरीद पर 2.5 फीसदी के आधार पर ही कमीशन मिलेगा। मध्य प्रदेश और राजस्थान तथा अन्य राज्यों में गेहूं की सरकारी खरीद सहकारी संस्थाओं के अलावा स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से की जाती है। पंजाब और हरियाणा को छोड़ इन राज्यों में गेहूं की सरकारी खरीद में मध्यस्थ को 33.75 रुपये प्रति क्विंटल के आधार पर तय कमीशन ही मिलेगा।

चालू सीजन में चीनी उत्पादन 10.5% गिरा

नई दिल्ली 168.6 लाख टन चीनी का उत्पादन हो पाय है फरवरी के अंत तक चालू पेराई सीजन 2013-14 (अक्टूबर से सितंबर) के दौरान 28 फरवरी तक चीनी उत्पादन में 10.5 फीसदी की गिरावट आकर कुल उत्पादन 168.6 लाख टन का हुआ है। देश भर में इस समय 460 चीनी मिलों में पेराई चल रही है जो पिछले साल की समान अवधि के मुकाबले 23 चीनी मिलें ज्यादा हैं। इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन (इस्मा) के अनुसार चालू पेराई सीजन में प्रमुख उत्पादक राज्यों महाराष्ट्र के साथ ही उत्तर प्रदेश में चीनी का उत्पादन कम हुआ है। अक्टूबर से शुरू हुए चालू पेराई सीजन में 168.6 लाख टन चीनी का ही उत्पादन हुआ है जबकि पिछले साल की समान अवधि में 188.4 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ था। महाराष्ट्र में चालू पेराई सीजन में 28 फरवरी तक 57.1 लाख टन चीनी का उत्पादन ही हुआ है जबकि पिछले पेराई सीजन में 65.7 लाख टन चीनी का उत्पादन हो चुका था। राज्य में चालू पेराई सीजन में रिकवरी 11.1 फीसदी की ही आ रही है जबकि पिछले पेराई सीजन में औसतन रिकवरी 11.15 फीसदी की थी। उत्तर प्रदेश में चालू पेराई सीजन में अभी तक 42.75 लाख टन चीनी का ही उत्पादन हुआ है जबकि पिछले पेराई सीजन की समान अवधि में 50.09 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ था। चालू पेराई सीजन में राज्य में अभी तक 475 लाख टन गन्ने की पेराई हुई है जबकि पिछले पेराई सीजन की समान अवधि में 560 लाख टन गन्ने की पेराई हुई थी। कर्नाटक में चालू पेराई सीजन में अभी तक 31.50 लाख टन, गुजरात में 8.60 लाख टन और तमिलनाडु में 5.70 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ है।

ताडने होंगे जी एम फसलों पर पूर्वाग्रह

नई दिल्ली दुनिया भर में 1996 से 2013 के बीच बायोटेक फसलों की खेती में हुई है सौ गुना बढ़ोतरी वर्ष 2013 की शुरूआत में जी एम फसलों के महत्व को लेकर प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने सार्वजनिक तौर पर अपने विचार देश के सामने रखे थे। कुछ उसी तरह वर्ष 2014 की शुरूआत भी एग्रीबायोटेक उद्योग के लिए खुशनुमा है। हमारे तमाम वैज्ञानिक प्रधानमंत्री के स्पष्ट वक्तव्य से उत्साहित है। अनुवांशिक रूप से परिवर्तित जीएम फसलों के लिए एक सक्षम नीति के लिए अपनी सरकार की प्रतिबद्धता दर्शाते हुए डॉ.सिंह ने कहा है कि जेनेटिकली मॉडिफाइड फसलों के बारे में अवैज्ञानिक पूर्वाग्रहों के सामने सरकार झुक नहीं सकती। अपने इस खरे बयान के साथ ही उन्होंने किसी भी अन्य विवाद पर यह कहते हुए लगाम लगा दिया कि सरकार जीएम फसलों के बारे में अब और ज्यादा पुनर्विचार न करते हुए आगे बढ़ेगी। गत चार फरवरी को भारतीय विज्ञान कांग्रेस में प्रधानमंत्री ने कहा,बायोटेक फसलों से संबंधित अवैज्ञानिक पूर्वाग्रहों के सामने अब और नहीं झुकना है। बायोटेक्नोलॉजी के इस्तेमाल से कृषि फसलों के अधिक पैदावार में मदद मिलेगी। ग्यारह फरवरी को संसद में पूछे गए एक प्रश्न पर कृषि मंत्री शरद पवार ने भी इस तथ्य को दोहराते हुए कहा कि वर्ष 1992 से 2002 के बीच कपास की पैदावार तकरीबन 300 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी, जो 2013 के दौरान बढ़कर 488 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गई। अन्य फसलों के पैदावार के मामले में भी इसी प्रकार की प्रभावशाली बेहतरी की सख्त जरूरत है, क्योंकि हमारे देश की आबादी दिनोंदिन बढ़ रही है और सभी का पेट भरने और उन्हें खिलाने की चुनौती सामने है। वर्ष 2030 तक हमारी जनसंख्या मौजूदा आबादी से 25 प्रतिशत बढ़कर 1.5 अरब से ज्यादा हो जाएगी, जबकि खेती के लिए उपलब्ध जमीन उतनी ही रहेगी। पिछले कुछ दशकों से भारत में जोते जाने वाले खेतों का क्षेत्रफल 14 करोड़ हेक्टेयर पर लगभग स्थिर बना हुआ है। इसका अर्थ है कि कृषि योग्य भूमि में वृद्धि की बेहद सीमित संभावना है। जाहिर है,मौजूदा उत्पादन प्रणालियों को ही प्रखर बनाना होगा, जो कि एकमात्र संभावना है। परंतु यह संभावना भी पानी और बिजली की कमी के चलते सीमित रहेगी। शहरीकरण और उद्योगीकरण की बढ़ती मांग के चलते जमीन, पानी और बिजली के लिए मुकाबला आने वाले समय में और कड़ा होने की उम्मीद है। ऐसे में समय रहते तैयारी आवश्यक है। भारत बड़ी मात्रा में ऊर्जा सघन उर्वरक व तेलों का अन्य देशों से आयात करता है। इस तरह आने वाले समय में बढ़ती लागत कीमतों से कृषि की लागत में भी इजाफा होगा और खेतों से होने वाले लाभ में कमी आएगी, जिससे किसानों को और अधिक नुकसान होगा। इसके साथ ही आने वाले समय में भारतीय बाजार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी दूसरे देशों की तुलना में अपेक्षाकृत कम प्रतिस्पर्धी हो जाएगा। इसके अलावा हमें जलवायु परिवर्तन का भी सामना करना होगा, जो कृषि क्षेत्र के चिरस्थायी विकास के समक्ष विकट चुनौतियां पेश कर रहा है।

एफसीआई कर्मियों को मिलेगी पेंशन!

नई दिल्ली... 25,000 निगम कर्मचारी लाभान्वित होंगे पेंशन की स्कीम लागू होने के बाद : इस सौगात से सरकारी खजाने पर 118 करोड़ की सब्सिडी का पड़ेगा बोझ : चुनाव आचार संहिता के चलते सरकार को इस बारे में पहले चुनाव आयोग से लेनी होगी इसकी अनुमति केंद्र सरकार भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) के कर्मचारियों को पेंशन की सौगात देने की तैयारी कर रही है। इससे सरकारी खजाने पर सालाना करीब 118 करोड़ रुपये की सब्सिडी का अतिरिक्त भार तो पड़ेगा, लेकिन पेंशन की स्कीम लागू होने के बाद निगम के लगभग 25,000 कर्मचारियों को इसका लाभ मिलेगा। हालांकि, चुनाव आचार संहिता लागू होने के कारण सरकार को इस आशय के प्रस्ताव के लिए पहले चुनाव आयोग से अनुमति लेनी होगी। देश के अन्य सार्वजनिक उपक्रमों की तरह केंद्र सरकार का एफसीआई के कर्मचारियों को भी पेंशन देने का प्रस्ताव है। इससे केंद्र सरकार पर सालाना करीब 118 करोड़ रुपये की अतिरिक्त सब्सिडी का भार पड़ेगा। उन्होंने बताया कि वर्ष 2007 से ही इस आशय के प्रस्ताव को लागू करने की योजना है। अगर यह वर्ष 2007 से लागू होता है तो इससे बकाया राशि के रूप में करीब 700 करोड़ रुपये का भार पड़ेगा। इसके अलावा पोस्ट रिटायरमेंट मेडिकल बेनेफिट स्कीम के तहत लगभग 45 करोड़ रुपये का अतिरिक्त खर्च भी पड़ेगा। केंद्र सरकार और एफसीआई के कर्मचारियों के मध्य भी हुए समझौते के आधार पर सरकार ने निगम के कर्मचारियों को पेंशन देने के प्रस्ताव पर हस्ताक्षर तो किए हुए हैं लेकिन पेंशन स्कीम अभी तक शुरू नहीं हो पाई है।

दो लाख किसानों का तो फसल बीमा ही नहीं हो सका,

रायपुर. छत्तीसगढ़ में चना-गेहूं उगाने वाले दो लाख से अधिक किसानों को बेमौसम बारिश से राहत नहीं मिल पाएगी क्योंकि उनकी फसल का बीमा नहीं कराया जा सका है। बैंक से कर्ज नहीं लेने वाले किसानों को बीमा की किस्त जमा करने केवल चार दिन का समय दिया गया। इसलिए केवल 1500 अऋणी किसान ही बीमा करा सके। बीमा कंपनियों ने इसकी तारीख बढ़ाने का प्रस्ताव कृषि विभाग को भेजा था, लेकिन शासन ने समय सीमा आगे नहीं बढ़ाई। इससे किसान सरकारी लाभ लेने से वंचित रह जाएंगे। प्रदेश में चना और गेहूं की फसल का बीमा कराने केंद्र सरकार ने 1 नवंबर को 25 प्रतिशत अनुदान देने की घोषणा की।

राज्य सरकार को 55 प्रतिशत और किसान से 20 प्रतिशत राशि देनी थी। लेकिन सरकार ने दो महीने देर से 28 दिसंबर को बीमा कराने का निर्णय लिया। जबकि इसकी अंतिम तारीख 31 दिसंबर थी। इसके चलते बैंक से कर्ज नहीं लेने वाले लगभग दो लाख किसान बीमा कराने से चूक

एनएमसीई को भाव में गड़बड़ी रोकने को निगरानी के निर्देश

नई दिल्ली फॉरवर्ड मार्केट्स कमीशन (एफएमसी) ने नेशनल मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज को निर्देश दिया है कि मूल्य में गड़बड़ी रोकने के लिए सौदों की कड़ी निगरानी की जाए। यह जानकारी एफएमसी ने अपनी ताजा रिपोर्ट में दी है। रिपोर्ट के अनुसार कमीशन ने 20 फरवरी को इस संबंध में निर्देश जारी किए थे। एनएमसीई से कहा गया कि वह अपने प्लेटफार्म पर हो रहे कारोबार में सभी सौदों की कड़ी निगरानी करे। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि कमोडिटी अनुबंधों के प्रचलित मूल्य में किसी तरह की बनावटीपन नहीं है। एनएमसीई प्लांटेशन उपज, मसालों, खाद्यान्न, मेटल्स और तिलहन के तमाम अनुबंधों में इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफार्म पर वायदा कारोबार की सुविधा मुहैया कराता है। एफएमसी ने अपनी रिपोर्ट में कारोबार के बारे में कहा कि पिछले अप्रैल से फरवरी तक देश के सभी कमोडिटी एक्सचेंजों का कुल कारोबार 40 फीसदी घटकर 95.13 लाख करोड़ रुपये रह गया। पिछले साल समान अवधि में 157.82 लाख करोड़ रुपये का कारोबार हुआ था। देश में 17 एक्सचेंज काम कर रहे हैं। इनमें से एमसीएक्स, एनसीडीईएक्स, एनएमसीई, आईसीईएक्स, एसीई और यूसीएक्स राष्ट्रीय स्तर के एक्सचेंज हैं। एफएमसी के आंकड़ों के मुताबिक इस दौरान बुलियन कमोडिटी का कारोबार 44 फीसदी घटकर 40.83 लाख करोड़ रुपये रह गया। पिछले साल समान अवधि में 73.26 लाख करोड़ रुपये रह गया। इसी तरह एनर्जी कमोडिटी में कारोबार 34.41 लाख करोड़ से घटकर 23.39 लाख करोड़ रुपये रह गया। कॉपर जैसी मेटल्स का कारोबार 45 फीसदी घटकर 16.46 लाख करोड़ रुपये रह गया। पिछले साल इस अवधि में 29.95 लाख करोड़ रुपये का कारोबार हुआ था। एग्री कमोडिटी का कारोबार 20.20 लाख करोड़ से घटकर 14.44 लाख करोड़ रुपये रह गया। कमोडिटी फ्यूचर्स से जुड़े जानकारों का कहना है कि सरकार द्वारा कमोडिटी ट्रांजेक्शन टैक्स (सीटीटी) लगाए जाने और एनएसईएल में 5500 करोड़ रुपये के घोटाले के बाद निवेशकों का रुझान कम हो गया। सीटीटी से जहां निवेशकों की लागत बढ़ गई जबकि एनएसईएल से भरोसे में कमी आई। एमसीएक्स के सिस्टर एक्सचेंज एनएसईएल में निवेशकों के 5500 करोड़ रुपये के भुगतान संकट में फंस गए।

काला सोना उत्पादन की उन्नत तकनीक (वर्मीकम्पोस्ट)

प्रकृति में लगभग 4200 प्रजाति के केचुऐं पाये जाते है। केचुंआ एक उभयलिंगी जीव होता है जो 4 सप्ताह अर्थात एक महीने में वयस्क होकर प्रजनन करने लायक बन जाते है उसके बाद एक बार संसर्ग करने के बाद एक केचुंआ एक सप्ताह में 2 से 3 कोकून देता है तथा एक कोकून में 3 अथवा 4 अण्डे निकलते है। यह प्रक्रिया 4–6 सप्ताह तक निरन्तर चलती रहती है। इस प्रकार 6 महिने में एक केचुंआ लगभग 256 केचुंऐ पैदा कर लेता है। केचुआ अन्धेरे में में रह कर प्रजनन करता है तथा अन्धेरे में ही रहना पसंद करता है। वैसे तो केचुएं 0 से 40 डिग्री सेन्टीग्रेड तक तापक्रम पर जीवित रह सकते है। लेकिन जब तापक्रम 28 से 32 डिग्री सेन्टीग्रेड तथा मिट्टी में नमी 50 से 60 प्रतिशत के मध्य होती है तब अधिक क्रियाशील रहते है। केचुंऐ जो कुछ खाता है उसमें से उसके शरीर के लिए जो आवश्यक पोषक तत्व होते है वे तो उनकी आंतो द्वारा ग्रहण कर लिये जाते है लेकिन जो केचुएं का मल निकलता है वो एक अच्छा जैविक खाद होता है। सडने वाली वस्तुऐ जो बाहर 1000 घण्टे में सडती है वो केचुऐं के आंतों में सिर्फ 1 घण्टे में सड़ जाती है। केचुऐं द्वारा तैयार खाद को वर्मीकम्पोस्ट कहते है।

केचुओं का जीवनकाल 150–180 दिन होता है लेकिन कुछ वैज्ञानिकों के अनुसार इसका जीवन चक्र 240 दिन होता है। उपरोक्त सभी प्रजातियों में से केवल 293 प्रजातियां ऐसी है जो कृषि में लाभकारी है। केचुओं को उनके रहने के आदत के आधार पर मुख्य रूप से दो भागों में बांटा जा सकता है।

◆गहरी सुरंग बनाने वाले।

◆सतही सुरंग बनाने वाले।

(1)लम्बाई–गहरी सुरंग बनाने वाले केचुंए 8–10 इंच लम्बे होते जबकि सतही सुरंग बनाने वाले केचुंए 3–4 इंच लम्बे होते है।

(2)वजन– गहरी सुरंग बनाने वाले एक केचुए का वजन लगभग 5 ग्राम होता है जबकि सतही सुरंग बनाने वाले एक केचुएं का वजन आधा से एक ग्राम होता है।

(3)सुरंग– गहरी सुरंग बनाने वाले केचुंए जमीन में लगभग 8–10 फीट गहरी व स्थायी सुरंग बनाकर रहना पंसद करते है। जबकि सतही सुरंग बनाने वाले केचुएं सवा से डेढ़ फीट ही गहरी सुरंग बनाते है।

(4)खाने की आदत– गहरी सुरंग बनाने वाले केचुंऐ 90 प्रतिशत तक तो मिट्टी खाते है तथा 10 प्रतिशत सड़ा हुआ कार्बनिक पदार्थ खाते है, जबकि सतही सुरंग बनाने वाले केचुएं 10 प्रतिशत तो मिट्टी खाते है तथा 90 प्रतिशत सड़ा हुआ कार्बनिक पदार्थ खाते है। कार्बनिक पदार्थ में मुख्य रूप से गोबर, सड़ी–गली सब्जियां एवं वानस्पतिक अवशेष आदि। सतही सुरंग बनाने वाले अर्थात छोटे वाले केचुंए पालने के लिये अच्छे रहते है।

वर्मीकम्पोस्ट खाद तैयार करने के लिये आवश्यक सामग्रीं –

1–प्लास्टिक शीट/चद्दर, 2–गोबर, 3–चारा–गेहूं व चावल का भूसा, पेड़ पौधो की सूखी पत्तीयां, 4–खेत की मिट्टी, 5–पानी, 6–वर्मीकास्ट।

वर्मीकास्ट – केचुंऐ तथा केचुएं के अण्डे के मिश्रण को वर्मीकास्ट कहते है। वर्मीकम्पोस्ट के लिये काम में आने वाली सामग्रीयों के चयन में निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिये

◆प्लास्टिक की शीट –फटी हुई नहीं होनी चाहिये। इसकी जगह खाली उर्वरक के कट्टो को साफ धोकर के सिलाई कर उसकी चद्दर भी तैयार की जा सकती है।

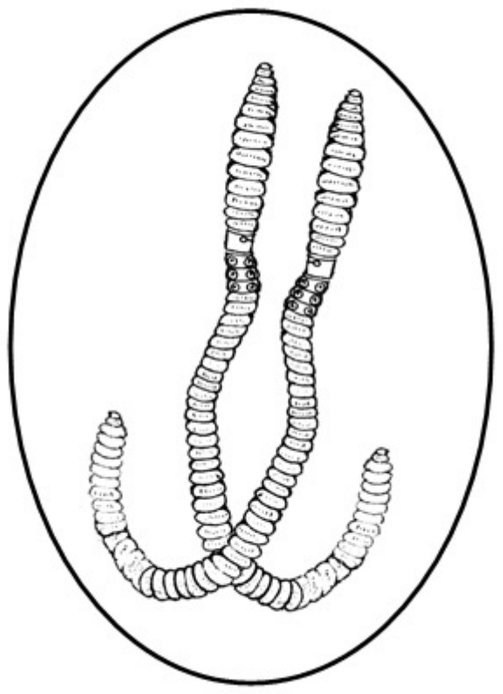

◆गोबर– तीन से चार दिन पुराना काम लेना चाहिये।

◆चारा– अर्द्ध शुष्क सड़ा गला चारा होना चाहिये।

गोबर तीन से चार दिन पुराना तथा चारा अर्द्ध शुष्क सड़ा गला ही क्यों काम में लेना पड़ता है। जब कोई चीज सड़ती हे तो उसमें गर्मी पैदा होती है यदि ताजा गोबर या ताजा चारा काम में लेगे तो जब वो सड़ेगा तब उसमें गर्मी पैदा होगी जिसके कारण केचुंए मर सकते है।

खेत की मिट्टी जो काम में लेते है उसमे ध्यान देने योग्य बाते मिट्टी में ऐसी वस्तुऐं जो नहीं सड़ती–गलती है, उसे अलग कर देने चाहिये। जैसे कांच, कंकर–पत्थर, बाल, लोहे की कील एवं प्लास्टिक आदि।

पतले से पतले प्लास्टिक को भी यदि जमीन में दबा दिया जाये तो वो 5000 वर्ष तक नहीं सड़ता है नहीं गलता हैं। गांवों में तथा शहरों में प्लास्टिक खाने से कई पशु हर वर्ष मरते है। राजस्थान की राजधानी जयपुर में औसतन प्रतिदिन 7 पशुओं की मौत प्लास्टिक खाने से होती है।

वर्मीकम्पोस्ट की बेड लगाने के लिए स्थान का चयन– वर्मीकम्पोस्ट तैयार करने के लिए छायादार स्थान का चुनाव करना अतिआवश्यक है। इसके लिये झोपड़ा भी तैयार किया जा सकता है या ऐसे स्थान पर जहां पर घनी छायादार वृक्ष हो। सुबह शाम अगर थोडी बहुत धूप भी आती हो तो ऐसे स्थान पर भी इसकी बेड लगाई जा सकती है।

वर्मीकम्पोस्ट की बेड निम्न जगह पर लगा सकते

◆समतल जमीन पर,

◆खड्डा खोद कर

◆लकड़ी की मचान अथवा ईट, पत्थर का चबूतरा बनाकर।

वर्मीकम्पोस्ट की बेड लगाने के लिए सबसे पहले तो प्लास्टिक की शीट बिछाते है। प्लास्टिक की शीट नहीं बिछायेंगे तो केचुएं जमीन में चले जायेगे। यदि जमीन कठोर हो अथवा पक्का फर्श हो तो प्लास्टिक की शीट बिछाना आवश्यक नहीं है।

(1)पहली परत – सबसे पहले 3–4 इंच मोटी एक परत अर्द्ध शुष्क सड़े गले चारे की बिछा देते है (सड़ा गला – गेहूं व चावल का भूसा, सूखे पेड़ पौधों की पत्तियां)। इसमें नीम के सूखे पत्ते भी डालने चाहिये।

(2)दूसरी परत – इसमें तीन भाग 3–4 दिन पुराना गोबर तथा एक भाग मिट्टी का मिश्रण बनाकर 3–4 इंच मोटी एक परत बिछादेते है। किसान भाईयों के पास घर में यदि राख होतो उसे भी मिट्टी के साथ मिला देना चाहिये। इसके बाद हल्कासा पानी छांट देना चाहिये।

(3)तीसरी परत – तीसरी परत के रूप में वर्मीकास्ट (केचुंए+केचुंओं के अण्डे) को समान रूप से बेड पर बिखेर देना चाहिये।

(4)चौथी परत – चौथी परत के रूप में एक 3–4 इंच मोटी परत 3–4 दिन पुराने गोबर की लगाते है। इसके बाद हल्कासा पानी छांट देना चाहिये।

(5)पांचवी तथा अन्तिम परत में 3–4 इंच की मोटी परत अर्द्ध शुष्क सड़े गले चारे की लगा देते है।

इस प्रकार से वर्मी कम्पोस्ट की बेड लग जाती है। इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिये कि बेड की कुल ऊंचाई डेढ़ फीट से अधिक नहीं होनी चाहिये।

वर्मीकम्पोस्ट की बेड लगाने के बाद खाद तैयार होने तक निम्न सावधानियां रखनी चाहिये। मौसम के अनुसार इतना पानी छिड़कना चाहिये बेड में हमेशा 30 से 40 प्रतिशत नमी बनी रहे। गर्मी के मौसम में 2–3 बार तथा सर्दी के मौसम में दिन में एक बार हल्कासा पानी छिडकना अति आवश्यक है क्योंकि केचुंऐ के शरीर में 85 प्रतिशत तक पानी होता है। केचुएं अपने शरीर की त्वचा से पानी का आदान–प्रदान करते है। केचुऐं के शरीर पर पाई जाने वाली श्लेषमा झिल्ली उसके शरीर के तापक्रम को नियंत्रित करने में मददगार होती है, यदि पानी नहीं छिडकेगें तो केचुंऐ मर जायेगें। मुर्गीयां, मेढ़क, चूहें, कुत्ते एवं सांप इसके दुश्मन है ये इसको खा जाते है। लगभग 2 महीने में वर्मीकम्पोस्ट खाद तैयार हो जाता है।

जब वर्मीकम्पोस्ट की बेड में ऊपर का भाग चाय की पत्ति की तरह दिखने लगे तब समझना चाहिये कि वर्मीकम्पोस्ट की खाद तैयार हो गई है। खाद तैयार होने के बाद केचुंओं को अलग निम्न प्रकार करेंगे। खाद तैयार हो जाये तो बेड में 2–3 दिन तक पानी नहीं छिडकना चाहिये। इसके बाद वर्मीकम्पोस्ट का ढ़ेर खुली जगह में सूर्य की रोशनी में लगा देते है। केचुऐं प्रकाश के प्रति संवेदनशील होते है। इसलिये जैसे ही सूर्य की रोशनी लगेगी तो केचुऐं खाद के ढेर में घुस जायेगें। तब हाथ की अंगुलियों से खाद की उपरी परत को धीरे धीरे हटाते रहो। जब देखों की खाद के साथ–साथ केचुऐं भी आने लगे तो कुछ देर के लिए रूक जाओं। पांच मिनट तक सूर्य का प्रकाश पड़ने दो केचुएं पुनः खाद के ढेर में घुस जायेगें। तब वापस हाथ अंगुलियों से खाद की उपरी परत धीरे धीरे हटाते जाओ। अंत में वर्मीकम्पोस्ट खाद और वर्मीकास्ट (केचुऐ+केचुएं के अण्डे) अलग अलग हो जायेगे।

वर्मीकम्पोस्ट खाद की निम्न विशेषताऐं होती है।

1.वर्मीकम्पोस्ट खाद पर एक विशेष प्रकार की झिल्ली होती है उसे पैराट्रोपिक झिल्ली कहते है। ये झिल्ली जल के वाष्पीकरण में कमी करती है।

2.वर्मीकम्पोस्ट खाद में पौधों के मुख्य पोषक तत्व–नाईट्रोजन और पोटाश के अलावा पौधों आवश्यक सुक्ष्म पोषक तत्व – जैसे कैल्शीयम, मैगनीशियम, सल्फर, जिंक कोबाल्ट तथा बौरान की मात्रा भी पाई जाती है।

3.वर्मीकम्पोस्ट खाद में एन्टीबायोटिक पदार्थ पाये जाते है इसलिये ऐसे खाद के उपयोग से पैदा होने वाली फसल में बीमारी कम लगती है।

4.जिस खेत में ये खाद डाली जायेगी उसमें खरपतवार तथा दीमक का प्रकोप कम होगा।

5.रासायनिक उर्वरकों की निर्भरता में कमी आयेगी।

6.ग्रामीण क्षेत्र में ये एक रोजगार का साधन हो सकता है।

वर्मीकम्पोस्ट खाद को किन–किन फसलों में उपयोग कर सकते है ? इसे सभी प्रकार की फसलों में उपयोग कर सकते है। लेकिन यदि फल–फूल एवं सब्जीयां वाली फसल लगा रहें हैं तो उसमें उपयोग करना अधिक लाभप्रद रहता है।

अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद की तुलना में वर्मीकम्पोस्ट में 5 गुना नाईट्रोजन 8 गुना फास्फोरस तथा 11 गुना पोटाश अधिक होता है। जिस जगह 10 टन गोबर की अच्छी सडी हुइ खाद की आवश्यकता होती है वहां पर केवल 3 टन वर्मीकम्पोस्ट ही पर्याप्त होता है। 5 टन प्रति हैक्टेयर के दर से वर्मीकम्पोस्ट खाद डालना चाहिये।

वर्मीकम्पोस्ट की बेड लगाने के लिये किसान भाई केचुएं विद्या भवन कृषि विज्ञान केन्द्र, बड़गांव, उदयपुर से प्राप्त कर सकते है।

विद्या भवन कृषि विज्ञान केन्द्र
बड़गॉव, उदयपुर (राज。)
फोन : (0294) 451313, (029) 450800
ई–मेल : vksoils@gmail.com

काला सोना उत्पादन की उन्नत तकनीक (वर्मीकम्पोस्ट)

Dr. V.K.Saini * , Dr. D.P.S. Dudi** and Mr.M.S. Rathore*
*विद्या भवन कृषि विज्ञान केन्द्र बड़गॉव, उदयपुर (राज。) फोन : (0294) 451313, (029) 450800 ई–मेल : vksoils@gmail.com
** Rajasthan College of Agriculture, MPUAT, Udaipur

फ़सल अवशेषों में आग मत लगाइये, इससे जमीन की उर्वरा शक्ति बढाइये

आर के एस राठौर, उप क्षेत्र प्रबन्धक, इफ़को ,रीवा (म प्र)

हमारे देश में फ़सलों के अवशेषों (Crop Residue) का उचित प्रबन्ध करने पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है या कहें कि इसका उपयोग मृदा में जीवांश पदार्थ अथवा नत्रजन की मात्रा बढाने के लिये नही किया जाकर इनका अधिकतर भाग या तो दूसरे घरेलू उपयोग में किया जाता है या फ़िर इन्हें नष्ट कर दिया जाता है जैसे कि गेहूं, गन्ने की हरी पत्तियां, आलू, मूली, की पत्तियां पशुओं को खिलाने में उपयोग की जाती है या फ़िर फ़ेंक दी जाती हैं। कपास, सनई, अरहर आदि के तने गन्ने की सूखी पत्तियां, धान का पुआल आदि सभी अधिकतर जलाने के काम में उपयोग कर लिये जाते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में एक समस्या मुख्य रूप से देखी जा रही है कि जहां हार्वेस्टर के द्वारा फ़सलों की कटाई की जाती है उन क्षेत्रों में खेतों में फ़सल के तने के अधिकतर भाग खेत में खडे रह जाते हैं तथा वहां के किसान खेत में फ़सल के अवशेषों को आग लगाकर जला देते हैं। अधिकतर रबी सीजन में गेहूं की कटाई के पश्चात विशेष रुप से देखने को मिलता है कि किसान अपनी फ़सल काटने के पश्चात फ़सलों के अवशेष (ण्दिर्ज्ञ्ग्ल) को उपयोग न करके उसको जला कर नष्ट कर देते हैं। इस समस्या की गंभीरता को देखते हुये प्रशासन द्वारा बहुत से जिलों में तो गेहूं की नरवाई जलाने पर रोक लगाई है तथा किसानों को शासन, कृषि विभाग एवं सम्बन्धित संस्थाओं द्वारा इस बारे में समझाने के प्रयास किये जा रहे हैं कि किसान अपने खेतों में अवशेषों में आग न लगा कर इसे खेत की जीवांश पदार्थ को बढाने में उपयोग करें ।

इसी प्रकार गांवों में पशुओं के गोबर का अधिकतर भाग खाद बनाने के लिये प्रयोग न करते हुये इसे ईंधन के रूप में उपयोग किया जा रहा है जबकि इसी गोबर को यदि गोबर गैस संयत्र में उपयोग किया जाय तो इससे बहुमूल्य एवं पोषक तत्वों से भरपूर गोबर की स्लरी प्राप्त कर खेत की उर्वरा शक्ति बढाने में उपयोग करना चाहिये साथ ही गोबर गैस को घर में ईंधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है तथा योजना को सफ़ल बनाने हेतु शासन द्वारा गोबर गैस बनाने के लिये अनुदान भी दिया जाता है परन्तु फ़िर भी परिणाम संतोषप्रद नहीं है जबकि जमीन में जीवांश पदार्थ की मात्रा निरन्तर कम होने से उत्पादकता या तो घट रही है या स्थिर हो गई है अत समय रहते इस पर ध्यान देकर जमीन की उर्वराशक्ति बढाने पर ही कृषि की उत्पादकता बढा पाना संभव हो सकता है जो कि देश की बढती जनसंख्या को देखते हुये नितान्त ही आवश्यक है।

हमारे देश में हम फ़सल अवशेषों का उचित उपयोग न कर इसका दुरुपयोग कर रहे हैं जबकि यदि इन अवशेषों को सही ढंग से खेती में उपयोग करें तो इसके द्वारा हम पोषक तत्वों के एक बहुत बढे अंश की पूर्ति इन अवशेषों के माध्यम से पूरा कर सकते हैं।

उपरोक्त तालिका को देखकर हम स्पष्ट रूप से अनुमान लगा सकते है कि कितनी अधिक मात्रा में हम अपने देश में मिट्टी के आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति कर सकते हैं विदेशों में जहां अधिकतर मशीनों से खेती की जाती है अर्थात पशुओं पर निर्भरता नहीं है वहां पर फ़सल के अवशेषों को बारीक टुकडों में काटकर मिट्टी में मिला दिया जाता है यद्दपि वर्तमान में हमारे देश में भी इस कार्य के लिये रोटावेटर जैसी मशीन का प्रयोग प्रारम्भ हो गया है जिससे खेत को तैयार करते समय एक बार में ही फ़सल अवशेषों को बारीक टुकडों में काट कर मिट्टी में मिलाना काफ़ी आसान हो गया है। जिन क्षेत्रों में नमी की कमी हो वहां पर फ़सल अवशेषों को कम्पोस्ट खाद तैयार कर खेत में डालना लाभप्रद होता है।

आस्ट्रेलिया, रूस, जापान व इंग्लैंड आदि विकसित देशों में इन अवशेषों को कम्पोस्ट बनाकर खेत में डालते हैं या इन्हें खेत में अच्छी प्रकार मृदा में मिलाकर सडाव की क्रिया को सुचारु रुप से चलाने के लिये समय समय पर जुताई करते रहते हैं।

फ़सल अवशेषों का उचित प्रबन्ध करने के लिये आवश्यक है कि अवशेष (गन्ने की पत्तियों, गेहूं के डंठलों) को खेत में जलाने की अपेक्षा उनसे कम्पोस्ट तैयार कर खेत में प्रयोग करें। उन क्षेत्रों में जहां चारे की कमी नहीं होती वहां मक्का की कडवी व धान की पुआल को खेत में ढेर बनाकर खुला छोडने के बजाय गडढों में कम्पोस्ट बनाकर उपयोग करना आवश्यक है। आलू तथा मूंग फ़ली जैसी फ़सलों को खुदाई कर बचे अवशेषों को भूमि में जोत कर मिला देना चाहिये। मूंग व उर्द की फ़सल में फ़लियां तोडकर खेत में मिला देना चाहिये। इसी प्रकार यदि केले की फ़सल के बचे अवशेषों से यदि कम्पोस्ट तैयार कर ली जाय तो उससे 1.87 प्रतिशत नत्रजन 3.43 प्रतिशत फ़ास्पोरस तथा 0.45 प्रतिशत पोटाश मिलता है।

फ़सलों के विभिन्न अवशेषों में नत्रजन, फ़ास्पोरस एवं पोटाश तत्वों की मात्रा

क्र	फ़सल अवशेष	नत्रजन प्रतिशत	फ़ास्पोरस प्रतिशत	पोटाश प्रतिशत
1	गेहूं का भूसा	0.53	0.10	1.10
2	जौ का भूसा	0.57	0.26	1.20
3	गन्ने की पत्तियां	0.35	0.10	0.60
4	गन्ने की खोई	2.25	0.12	.
5	धान की पुआल	0.36	0.08	0.70
6	राई/सरसों का तना	0.57	0.28	1.40
7	मक्का की कडवी	0.47	0.57	1.65
8	बाजरे की कडवी	0.65	0.75	2.50
9	धान की भूसी	0.40	0.25	0.40
10	मूंगफली का छिलका	0.70	0.48	1.40
11	आलू	0.52	0.09	0.85
12	मटर की सूखी पत्तियां	0.35	0.12	0.36
13	करंज की सूखी पत्तियां	2.65	0.41	2.42
14	वृक्षों की सूखी पत्तियां	1.50	0.45	2.50

खेतों के अन्दर सस्यावशेष प्रबन्ध . (Management of Crop Residues)

फ़सल की कटाई के बाद खेत में बचे अवशेष घास.फूंस, पत्तियां व ठूंठ आदि (ण्दिर्ज्ञ्ग्ल) को सडाने के लिये किसान भाई फ़सल को काटने के पश्चात 20-25 किग्रा नाइट्रोजन प्रति हैक्टर की दर से छिडक कर कल्टीवेटर या रोटावेटर से काटकर मिट्टी में मिला देना चाहिये इस प्रकार अवशेष खेत में विघटित होना प्रारम्भ कर देंगे तथा लगभग एक माह में स्वंय सडकर आगे बोई जाने वाली फ़सल को पोषक तत्व प्रदान कर देंगे क्योंकि कटाई के पश्चात दी गई नाइट्रोजन अवशेषों में सडन की क्रिया (अम्दस्ज्देगूग्दह) को तेज कर देती है। अगर फ़सल अवशेष खेत में ही पडे रहे तो फ़सल बोने पर जब नई फ़सल के पौधे छोटे रहते हैं तो वे पीले पड जाते हैं क्योंकि उस समय अवशेषों के सडाव में जीवाणु भूमि की नाइट्रोजन का उपयोग कर लेते है तथा प्रारम्भ में फ़सल पीली पड जाती है अत फ़सल अवशेषों का प्रबन्ध करना अत्यन्त आवश्यक है तभी हम अपनी जमीन में जीवांश पदार्थ (Organic matter) की मात्रा में वृद्धि कर जमीन को खेती योग्य सुरक्षित रख सकते हैं।

दुधारू पशुओं के प्रमुख रोग व उनका उपचार

दुधारू पशुओं में अनेक कारणों से बहुत सी बीमारियाँ होती हैं सूक्ष्म विषाणु, जीवाणु, फफूंदी, अंतः व ब्रह्मा परजीवी, प्रोटोजोआ, कुपोषण तथा शरीर के अंदर की चयापचय (मेटाबोलिज्म) क्रिया में विकार आदि प्रमुख कारणों में हैं इन बीमारियों में बहुत सी जानलेवा बीमारियां है था कई बीमारियाँ पशु के उत्पादन पर कुप्रभाव डालती हैं कुछ बीमारियाँ एक पशु से दूसरे पशु को लग जाती हैजैसे मुह व खुर की बीमारी, गल घोंटू, आदि, छूतदार रोग कहते हैं कुछ बीमारियाँ पशुओं से मनुष्यों में भी आ जाती है जैसे रेबीज़ (हल्क जाना), क्षय रोग आदि, इन्हें जुनोटिक रोग कहते हैं अतः पशु पालक को प्रमुख बीमारियों के बारे में जानकारी रखना आवश्यक है ताकि वह उचित समय पर उचित कदम उठा कर अपना आर्थिक हानि से बचाव तथा मानव स्वास्थ्य की रक्षा में भी सहयोग कर सकें दुधारू पशुओं के प्रमुख रोग् निम्नलिखित हैः

(क)विषाणु जनित रोग

मुहं व खुर की बीमारी

सूक्ष्म विषाणु (वायरस) से पैदा होने वाली बीमारी को विभिन्न स्थानों पर विभिन्न स्थानीय नामों से जाना जाता है जैसेकि खरेडू,मुहं पका खुर पका, चपका,खुरपा आदिं यह बहुत तेज़ी फैलाने वाला छुतदार रोग है जोकि गाय, भैंस, भेड़, ब्रिम ऊंट, सुअर आदि पशुओं में हित हैं विदेशी व संकर नस्ल रोग की गायों में यह बीमारी अधिक गम्भीर रूप से पायी जाती हैं यह बीमारी हमारे देश में हर स्थान में होती हैं इस रोग से ग्रस्त पशु ठीक होकर अत्यन्त कमज़ोर हो जाते हैं दुधारू पशुओं में दूध का उत्पादन बहुत कम हो जाता है तथा बैल काफी समय तक कं करने योग्य नहीं रहतें शरीर पर बालों का कवर खुरदरा था खुर हरूप हो जाते हैं

रोग का कारणः-मुंहपका-खुरपका रोग एक अत्यन्त सुक्ष्ण विषाणु जिसके अनेक प्रकार तथा उप-प्रकार है, से होता हैं इनकी प्रमुख किस्मों में ओ,ए,सी,एशिया-1,एशिया-2,एशिया-3, सैट-1, सैट-3 तथा इनकी 14 उप-किस्में शामिल हैं हमारे देश मे यह रोग मुख्यतः ओ,ए,सी तथा एशिया-1 प्रकार के विषाणुओं द्वारा होता हैं नम-वातावरण, पशु की आन्तरिक कमजोरी, पशुओं तथा लोगों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर आवागमन तथा नजदीकी क्षेत्र में रोग का प्रकोप इस बीमारी को फैलाने में सहायक कारक हैं

संक्रमण विधिः- यह रोग बीमार पशु के सीधे सम्पर्क में आने, पानी, घास, दाना, बर्तन, दूध निकलने वाले व्यक्ति के हाथों से, हवा से तथा लोगों के आवागमन से फैलता हैं रोग के विषाणु बिमार पशु की लार, मुंह, खुर व थनों में पड़े फफोलों में बहुत अधिक संख्या में पाए जाते हैं ये खुले में घास, चारा, तथा फर्श पर चार महीनों तक जीवित रह सकते हैं लेकिन गर्मीं कें मौसम में यह बहुत जल्दी नष्ट हो जाते हैं विषाणु जीभ, मुंह, आंत, खुरों के बीच की जगह, थनों तथा घाव आदि के द्वारा स्वस्थ पशु के रक्त में पहुंचते हैं तथा लगभग 5 दिनों के अंदर उसमें बीमारी के लक्षण पैदा करते हैं

रोग के लक्षण :- रोग ग्रस्त पशु को 104-106 डि. फारेनहायट तक बुखार हो जाता हैं वह खाना-पीना व जुगाली करना बन्द कर देता हैंदूध का उत्पादन गिर जाता हैं मुंह से लार बहने लगती है तथा मुंह हिलाने पर चप-चप की आवाज़ आती हैं इसी कारण इसे चपका रोग भी कहते हैंतेज़ बुखार के बाद पशु के मुंह के अंदर,गालों,जीभ,होंठ तालू व मसूड़ों के अंदर,खुरों के बीच तथा कभी-कभी थनों व आयन पर छाले पड़ जाते हैं ये छाले फटने के बाद घाव का रूप ले लेते हैं जिससे पशु को बहुत दर्द होने लगता हैं मुंह में घाव व दर्द के कारण पशु कहाँ-पीना बन्द कर देते हैं जिससे वह बहुत कमज़ोर हो जाता हैंखुरों में दर्द के कारण पशु लंगड़ा चलने लगता हैं गर्भवती मादा में कई बार गर्भपात भी हो जाता हैं नवजात बच्छे/बच्छियां बिना किसी लक्षण दिखाए मर जाते हैं लापरवाही होने पर पशु के खुरों में कीड़े पड़ जाते हैं तथा कई बार खुरों के कवच भी निकल जाते हैं हालांकि व्यस्क पशु में मृत्यु दर कम (लगभग 10३) है लेकिन इस रोग से पशु पालक को आर्थिक हानि बहुत ज्यादा उठानी पड़ती हैं दूध देने वाले पशुओं में दूध के उत्पादन में कमी आ जाती हैं ठीक हुए पशुओं का शरीर खुरदरा तथा उनमें कभी कभी हांफना रोग होजाता हैं बैलों में भारी काम करने की क्षमता खत्म हो जाती हैं

उपचारः- इस रोग का कोई निश्चित उपचार नहीं है लिकिन बीमारी

की गम्भीरता को कम करने के लिए लक्षणों के आधार पर पशु का उपचार किया जाता हैं रोगी पशु में सेकैन्डरी संक्रमण को रोकने के लिए उसे पशु चिकित्सक की सलाह पर एंटीबायोटिक के टीके लगाए जाते हैं मुंह व खुरों के घावों को फिटकरी याँ पोटाश के पानी से धोते हैं मुंह में बोरो-गिलिसरीन तथा खुरों में किसी एंटीसेप्टिक लोशन या क्रीम का प्रयोग किया जा सकता हैं

रोग से बचावः-

(1) इस बीमारी से बचाव के लिए पशुओं को पोलीवेलेंट वेक्सीन के वर्ष में दो बार टीके अवश्य लगवाने चाहिऐंबच्छे/बच्छियां में पहला टीका 1माह की आयु में, दूसरे तीसरे माह की आयु तथा तीसरा 6 माह की उम्र में और उसके बाद नियमित सारिणी के अनुसार टीके लगाए जाने चाहिऐं

(2)बीमारी हो जाने पर रोग ग्रस्त पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग कर देना चाहिऐं

(3)बीमार पशुओं की देख-भाल करने वाले व्यक्ति को भी स्वस्थ पशुओं के बाड़े से दूर रहना चाहिऐं

(4)बीमार पशुओं के आवागमन पर रोक लगा देना चाहिऐं

(5)रोग से प्रभावित क्षेत्र से पशु नहीं खरीदना चाहिऐं

(6)पशुशाला को साफ-सुथरा रखना चाहिऐं

(7)इस बीमारी से मरे पशु के शव को खुला न छोड़कर गाढ़ देना चाहिऐं

2.पशु प्लेग (रिन्डरपेस्ट):

यह रोग भी एक विषाणु से पैदा वला छुतदार रोग है जोकि जुगाली करने वाले लगभग सभी पशुओं को होता हैं इनमें पशु को तीव्र दस्त अथवा पेचिस लग जाते हैं यह रोग स्वस्थ पशु को रोगी पशु के सीधे संपर्क में आने से फैलता हैं इसके अतिरिक्त वर्तनों तथा देखभाल करने वाले व्यक्ति द्वारा भी यह बीमारी फैल सकती हैं इसमें पशु को तेज़ बुखार हो जाता है तथा पशु बेचैन हो जाता हैं दुग्ध उत्पादन कम हो जाता है और पशु की आँखें सुर्ख लाल हो जाती हैं2-3 दिन के बाद पशु के मुंह में होंठ, मसूड़े व जीभ के नीचे दाने निकल आटे हैं जो बाद में घाव का रूप ले लेते हैं पशु में मुंह से लार निकलने लगती है तथा उसे पतले व बदबूदार दस्त लग जाते हैं जिनमें खून भी आने लगता हैं इसमें पशु बहुत कमज़ोर हो जाता है तथा उसमें पानी की कमी हो जाती हैं इस बीमारी में पशु की 3-9 दिनों में मृत्यु हो जाती हैं इस बीमारी के प्रकोप से विश्व भर में लाखों की संख्या में पशु मरते ठे लेकिन अब विश्व स्ट् पर इस रोग के उन्मूलन की योजना के अंतर्गत भारत सरकार सरकार द्वारा लागू की गयी रिन्डरपेस्ट इरेडीकेशन परियोजना के तहत लगातार शत प्रतिशत रोग निरोधक टीकों के प्रयोग से अब यह बीमारी प्रदेश तथा देश में लगभग समाप्त हो चुकी हैं

3.पशुओं में पागलपन या हलकजाने का रोग (रेबीज):

इस रोग को पैदा करने वाले सूक्ष्म विषाणु हलकाये कुत्ते, बिल्ली,बंदर, गीदड़, लोमड़ी या नेवले के काटने से स्वस्थ पशु के शरीर में प्रवेश करते हैं तथा नाडियों के द्वारा मस्तिष्क में पहुंच कर उसमें बीमारी के लक्षण पैदा करते हैं रोग ग्रस्त पशु की लार में यह विषाणु बहुतायत में होता है तथा रोगी पशु द्वारा दूसरे पशु को काट लेने से अथवा शरीर में पहले से मौजूद किसी घाव के ऊपर रोगी की लार लग जाने से यह बीमारी फैल सकती हैं यह बीमारी रोग ग्रस्त पशुओं से मनुष्यों में भी आ सकती है अतः इस बीमारी का जन स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत महत्व हैं एक बार पशु अथवा मनुष्य में इस बीमारी के लक्षण पैदा होने के बाद उसका फिर कोई इलाज नहीं है तथा उसकी मृत्यु निश्चित हैं विषाणु के शरीर में घाव आदि के माध्यम से प्रवेश करने के बाद 10दिन से 210 दिनों तक की अवधि में यह बीमारी हो सकती हैं मस्तिष्क के जितना अधिक नज़दीक घाव होता है उतनी ही जल्दी बीमारी के लक्षण पशु में पैदा हो जाते है जैसे कि सिर अथवा चेहरे पर काटे गए पशु में एक हफ्ते के बाद यह रोग पैदा हो सकता हैं

लक्षण :- रेबीज़ मुख्यतः दो रूपों में देखी जाती है,पहला जिसमें रोग ग्रस्त पशु काफी भयानक हो जाता है तथा दूसरा जिसमें वह बिल्कुल शांत रहता हैंपहले अथवा उग्र रूप में पशु में रोग के सभी लक्षण स्पष्ट दिखायी देते हैं लेकिन शांत रूप में रोग के लक्षण बहुत कम अथवा लहभ नहीं के बराबर ही होते हैं

कुत्तों में इस रोग की प्रारम्भिक अवस्था में व्यवहार में परिवर्तन हो जाता है तथा उनकी आंखे अधिक तेज नज़र आती हैं कभी-कभी शरीर का तापमान भी बढ़ जाता हैं 2-3 दिन के बाद उसकी बेचैनी बढ़ जाती है तथा उसमें बहुत ज्यादा चिड-चिडापन आ जाता हैंवह काल्पनिक वस्तुओं की और अथवा बिना प्रयोजन के इधर-उधर काफी तेज़ी से दौड़ने लगता हैं तथा रास्ते में जो भी मिलता है उसे वह काट लेता हैंअन्तिम अवस्था में पशु के गले में लकवा हो जाने के कारण उसकी आवा बदल जाती है, शरीर में कपकपी तथा छाल में लड़खड़ाहट आ जाती है तथा वह लकवा ग्रस्त होकर अचेतन अवस्था में पड़ा रहता हैं इसी अवस्था में उसकी मृत्यु हो जाती हैं गाय व भैंसों में इस बीमारी के भयानक रूप के लक्षण दिखते हैं पशु काफी उत्तेजित अवस्था में दिखता है तथा वह बहुत तेजी से भागने की कोशिश करता हैं वह ज़ोर-ज़ोर से रम्भाने लगता है तथा बीच-बीच में जम्भाइयाँ लेता हुआ दिखाई देता हैं वह अपने सिर को किसी पेड़ अथवा दीवाल ले साथ टकराता हैं कई पशुओं में मद के लक्षण भी दिखायी से सकते हैं रोग ग्रस्त पशु ही दुर्बल हो जाता है और उसकी मृत्यु हो जाती हैं

मनुष्य में इस बीमारी के प्रमुख लक्षणों में उत्तेजित होना, पानी अथवा कोई खाद्य पदार्थ को निगलने में काफी तकलीफ महसूस करना तथा अंत में लकवा लकवा होना आदि हैं

उपचार तथा रोकथामः- एक बार लक्षण पैदा हो जाने के बाद इस बीमारी का कोई इलाज नहीं हैं जैसे ही किसी स्वस्थ पशु को इस बीमारी से ग्रस्त पशु काट लेता है उसे तुरन्त नजदीकी पशु चिकित्सालय में ले जाकर इस बीमारी से बचाव का टीका लगवाना चाहिऐं इस कार्य में ढील बिल्कुल नहीं बरतनी चाहिए क्योंकि ये टीके तब तक ही प्रभावकारी हो सकते हैं जब तक कि पशु में रोग के लक्षण पैदा नहीं होतेंपालतू कुत्तों को इस बीमारी से बचने के लिए नियमित रूप से टीके लगवाने चाहिए तथा आवारा कुत्तों को समाप्त के देने चाहिऐं पालतू कुत्तों का पंजीकरण सथानीय संस्थाओं द्वारा करवाना चाहिए तथा उनके नियमित टीकाकरण का दायित्व निष्ठापूर्वक मालिक को निभाना चाहिऐं

(ख)जीवाणु जनित रोग

1. गलघोंटू रोग (एच.एस.):

गाय व भैंसों में होने वाला एक बहुत ही घातक तथा छूतदार रोग है जुकी अधिकतर बरसात के मौसम में होता है यह गोपशुओं की अपेक्षा भैंसों में अधिक पाया जाता हैं यह रोग नहुत तेज़ी से फैलकर बड़ी संख्या मे पशुओं को अपनी चपेट में लेकर उनकी मौर का कारण बन जाता हैं जिससे पशु पालकों को भारी नुकसान उठाना पड़ता हैं इस रोग के प्रमुख लक्षणों में तेज़ बुखार, गले में सूजन, सांस लेने में तकलीफ निकालकर सांस लेना तथा सांस लेते समय तेज़ आवाज होया आदि शामिल हैं कई बार बिना किसी स्पष्ट लक्षणों के ही पशु की अचानक मृत्यु हो जाती हैं

उपचार तथा रोकथामः- इस रोग से ग्रस्त हुए पश को तुरन्त पशु चिकित्सक को दिखाना चाहिए अन्यथा पशु की मौत हो जाती हैं सही समय पर उपचार दिए जाने पर रोग ग्रस्त पशु को बचाया जा सकता हैं इस रोग की रोकथाम के लिए रोगनिरोधक टीके लगाए जाते हैं पहला टीका 3 माह की आयु में दूसरा 9 माह की अवस्था में तथा इसके बाद हर साल यह टीका लगाया जाता हैं ये टीके पशु चिकित्सा संस्थानों में निःशुल्क लगाए जाते हैं

2.लंगड़ा बुखार (ब्लैक क्वार्टर):

जीवाणुओं से फैलने वाला यह रोग गाय व भैंसों दोनों को होता है लिकिन गोपशुओं में यह बीमारी अधिक देखी जाती है तथा इससे अच्छे व स्वस्थ पशु ही ज्यादातर प्रभावित होते हैं इस रोग में पिछली अथवा अगली टांगों के ऊपरी भाग में भारी सूजन आ जाती हैं जिससे पशु लंगड़ा कर चलने लगता है या फिर बैठ जाता हैं पशु को तेज़ बुखार हो जाता है तथा सूजन वाले स्थान को दबाने पर कड़-कड़ की आवाज़ आती हैं

उपचार तथा रोकथामः- रोग ग्रस्त पशु के उचार हेतू तुरन्त नजदीकी पशु चिकित्सालय में संपर्क करना चाहिए ताकि पशु को शीघ्र उचित उपचार मिल सकें देर करने से पशु को बचना लगभग असंभव हो जाता है क्योंकि जीवाणुओं द्वारा पैदा हुआ जहर (टोक्सीन) शरीर में पूरी को बचना लगभग असंभव हो जाता है जोकि पशु की मृत्यु का कारण बन जाता हैं उपचार के लिए पशु को ऊँची डोज़ में प्रोकें पेनिसिलीन के टीके लगाए जाते हैं तथा सूजन वाले स्थान पर भी इसी दवा को सुई द्वारा माँस में डाला जाता हैं इस बीमारी से बचाव के लिए पशु चिकित्सक संस्थाओं में रोग निरोधक टीके निःशुल्क लगाए जाते है अतःपशु पालकों को इस सुविधा का अवश्य लाभ उठाना चाहिऐं

3.ब्रुसिल्लोसिस (पशुओं का छूतदार गर्भपात):

जीवाणु जनित इस रोग में गोपशुओं तथा भैंसों में गर्भवस्था के अन्तिम त्रैमास में गर्भपात हो जाता हैं यह रोग पशुओं से मनुष्यों में भी आ सकाता हैं मनुष्यों में यह उतार-चढ़ाव वाला बुखार (अज्युलेण्ट फीवर)नामक बीमारी पैदा करता हैं पशुओं में गर्भपात से पहले योनि से अपारदर्शी पदार्थ निकलता है तथा गर्भपात के बाद पशु की जेर रुक जाती हैं इसके अतिरिक्त यह जोड़ों में आर्थ्रायटिस (जोड़ों की सूजन) पैदा के सकता हैं

उपचार व रोकथामः- अब तक इस रोग का कोई प्रभाव करी इस्लाज नहीं हैं यदि क्षेत्र में इस रोग के 5% से अधिक पोजिटिव केस हों टो रोग की रोकथाम के लिए बच्छियों में 3-6 माह की आयु में ब्रुसेल्ला-अबोर्टस स्ट्रेन-19 के टीके लगाए जा सकते हैं पशुओं में प्रजनन की कृत्रिम गर्भाधान पद्यति अपना कर भी इस रोग से बचा जा सकता हैं

(ग) रक्त प्रोटोज़ोआ जनित रोग-

1. बबेसिओसिस अथवा टिक फीवर (पशुओं के पेशाब में खून आना):

यह बीमारी पशुओं में एक कोशिकीय जीव जिसे प्रोटोज़ोआ कहते हैं से होती हैं बबेसिया प्रजाति के प्रोटोज़ोआ पशुओं के रक्त में चिचडियों के माध्यम से प्रवेश के जाते हैं तथा वे रक्त की लाल रक्त कोशिकाओं में जाकर अपनी संख्या बढ़ने लगते हैं जिसके फलस्वरूप लाल रक्त कोशिकायें नष्ट होने लगती हैं लाल रक्त किशिकाओं में मौजूद हीमोग्लोबिन पेशाब के द्वारा शरीर से बाहर निकलने लगता है जिससे पेशाब का रंग कॉफी के रंग का हो जाता हैं कभी-कभी उसे खून वाले दस्त भी लग जाते हैं इसमें पशु खून की कमी हो जाने से बहुत कमज़ोर हो जाता है पशु में पीलिया के लक्षण भी दिखायी देने लगते हैं तथा समय पर इलाज ना कराया जाय तो पशु की मृत्यु हो जाती हैं

उपचार व रोकथामः- यदि समय पर पशु का इलाज कराया जाये तो पहु को इस बीमारी से बचाया जा सकता हैं इसमें बिरेनिल के टीके पश के भर के अनुसार मांस में दिए जाते हैं तथा खून बढाने वाली दवाओं का प्रयोग कियस जाता हैं इस बीमारी से पशुओं को बचाने के लिए उन्हें चिचडियों के प्त्कोप से बचना जरूरी है क्योंकि ये रोग चिचडियों के द्वारा ही पशुओं में फैलता हैं

(घ)बाह्य तथा अंतः परजीवी जनित रोग-

1.पशुओं के शरीर पर जुएं,चिचडी तथा पिस्सुओं का प्रकोपः-

पशुओं के शरीर पर बाह्य परजीवी जैसे कि जुएं,पिस्सु या चिचडी आदि प्रकोप पर पशुओं का खून चूसते हैं जिससे उनमें खून की कमी हो जाती है तथा वे कमज़ोर हो जाते हैं इन पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता घट जाती है तथा वे अन्य बहुत सी बीमारियों के शिकार हो जाते हैं बहुत से परजीवी जैसे कि चिचडियों आदि पशुओं में कुछ अन्य बीमारी जैसे टीक-फीवर का संक्रमण भी के देते हैं पशुओं में बाह्य परजीवी के प्रकोप को रोकने के लिए अनेक दवाइयां उपलब्ध हैं जिन्हें पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार प्रयोग करके इनसे बचा जा सकता हैं

2.पशुओं में अंतःपरजीवी प्रकोपः-

पशुओं की पाचन नली में भी अनेक प्रकार के परजीवी पाए जाते हैं जिन्हें अंतः परजीवी कहते हैं हैं ये पशु के पेट, आंतों, यकृत उसके खून व खुराक पर निर्वाह करते हैं जिससे पहु कमज़ोर हो जाता है तथा वह अन्य बहुत सी बीमारियों का शिकार हो जाता हैं इससे पशु की उत्पादन क्षमता में भी कमी आ जाती हैं

पशुओं को उचित आहार देने के बावजूद यदि वे कमजोर दिखायी दें तो इसके गोबर के नमूनों का पशु चिकित्सालय में परीक्षण करना चाहिऐं परजीवी के अंडे गोबर के नमूनों में देखकर पशु को उचित दवा दी जाती है जिससे परजीवी नष्ट हो जाते हैं

सृष्टि एग्रो परिवार आपका स्वागत करता है

सदस्यता फार्म

सादस्य का

नामः.....

संस्था का

नामः.....

पूरा पताः.....

ग्राम :.....तहसील :.....

जिलाः.....राज्यः.....पिन कोड

दूरभाष कार्यः.....निवासः.....

सदस्यता राशि

एक वर्ष :151 ☐ तीन वर्ष :351 ☐ पांच वर्ष :501 ☐

कृपया हमें/मुझे सृष्टी एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें।

सदस्यता राशि नकद/मनीओर्डर/चैक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रूपये (अंकों में) शब्दों में :.....

बैंक का नामः..... ड्राफ्ट चेक क्रमांकः.....दिनांकः.....

स्थानः..... प्रतिनिधि का नामः.....हस्ताक्षर सदस्यः.....

दिनांकः.....

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064. Tel: 022-66998360/61Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908.Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com

एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

पक्षी भी देते हैं तलाक!

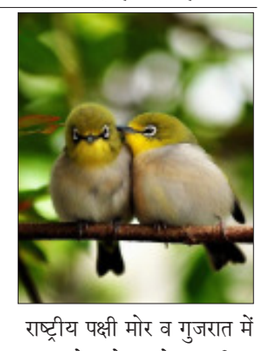

अलीगढ़। इसमें किसी को संशय नहीं कि इंसानी जिंदगी में तलाक का सीधा मतलब दांपत्य जीवन में भूचाल ही होता है। पारिवारिक विघटन की ऐसी दर्दनाक दास्तान पक्षियों की कुछ प्रजातियों को भी झेलनी पड़ती है। जोड़ीदार से झगड़ा हो जाए या फिर दूसरा साथी ज्यादा सुंदर मिल जाए तो पक्षी तलाक देने में भी देरी नहीं करते। कुछ पक्षी कई से रिश्ते बनाने के शौकीन होते हैं। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी (एएमयू) में वाइल्ड लाइफ विभाग के प्रो. एचएसए याहया ने दशकों के शोध से कई नायाब चीजें पुस्तक में संजोई हैं।

एएमयू के वाइल्ड लाइफ डिपार्टमेंट के प्रो. एचएसए याहया बीते 40 साल से पक्षियों पर शोध कार्य में लगे हुए हैं। खासकर वारबेट प्रजाति के पक्षी, खरमोर, नरकोंडम हॉर्न बिल व सफेद पंख वाली बतख पर। शोध के सिलसिले में स्कॉटलैंड, कैलिफोनिर्या और सऊदी अरब तक जा चुके हैं। इसी हफ्ते उर्दू में लिखित पुस्तक गर्द-ओ-पेश में उन्होंने इसका पूरा उल्लेख किया है। यह उनकी 11वीं पुस्तक है। सारस और आस्ट्रिया का पहाड़ी कौवा (रैबीन) एक ही जीवनसाथी के साथ पूरी उम्र काट देते हैं। नर हो या मादा, कोई अपनी जिंदगी में दूसरे को नहीं आने देता। दुखद है कि कम होते जंगलों और बढ़ते प्रदूषण से इनकी संख्या लगातार घट रही है।

बया भी लाजवाब

बया पक्षी सबसे ज्यादा जोड़े बनाते हैं। नर घोंसला अधूरा छोड़ देता है। बाकी का घोंसला जोड़ा बनने पर दोनों बनाते हैं। मादा बया को अच्छा नर मिल जाता है तो वह पहले वाले को छोड़ देती है।

रिझाते हैं मादा को

राष्ट्रीय पक्षी मोर व गुजरात में पाए जाने वाले खरमोर का जीवन सबसे जुदा होता है। यहां नर अपना जोड़ा बनाने के लिए उछलकूद करके खास आवाज निकालते हुए मादा को रिझाता है। मादा मोर इनकी अदा पर फिदा हो जाती है। मोर की सुंदरता का ही यह असर है कि कई से अधिक मोरनी मोहित रहती हैं। अमेरिकन मॉकिंग वर्ल्ड व पॉलीएंड्री ऐसी प्रजातियां हैं, जिसमें मादा एक से अधिक नर से संबंध बनाती है। वर्ल्ड ऑफ पैराडाइज की भी एक प्रजाति ऐसी ही है। एक से ज्यादा से संबंध ही तलाक की वजह बनते हैं।

सामायिक फल खाये: जाने गुण फलो के

कु 0 मधु , डा0 सियाराम विश्वकर्मा व् उमा वर्मा
अनुवांशिकी एवंम पादप प्रजनन विभाग
नरेन्द्र देव कृषि एव प्रद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फ़ैजाबाद

यह अटल सत्य है कि जान है तो जहाँ है। अज के बदलते परिवेश में असयमितजीवन और खान - पान में लापरवाही के चलते , हर उम्र में मनुष्य का शारीर कही विमरियो के चपेट में आ जाता है। अगर आप लम्बी उम्र के साथ सेहत चाहते है तो आपको भरपूर सामायिक फलो व् सब्जियों का प्रयोग करना चाहिए । क्योंकि फलो में औषधीय गुण होता है । इसमे प्राकृतिक शर्करा, प्रोटीन, बिटामिन, पोषक तत्व,एन्टीआक्सीडेंट व् खनिज लवण मौजूद रहते है। दुनिया भर के आहार विशेषन इस बात से सहमत है कि प्रत्येक रंग के खाद्य पदार्थ में अलग- अलग प्रकार के पोषक तत्व पाए जाते है ।लाल रंग के फलो में बिटामिन ए और एंटीआक्सीडेन्ट्स - रोग रक्षक व् जीवन रक्षक तत्व पर्याप्त मात्रा में पाये जाते है। जापानियों का विश्वास ही कि 25 अलग - अलग रंगों के खाद्य पदार्थ को आहार में स्थान देने से कैसर और ह्रदय रोगों से बचाव होता है । वस्तुतः फलो और सब्जियों में जो कुदरती रंग पाये जाते है वे फाइटोकेमिकल्स के कारण होते है, जिन फलो व् सब्जियों में जितना रंग गहरा होगा उतनी ही मात्रा में इनमे पोषक तत्व के साथ रोगे से लड़ने वाले तत्व मिलेंगे। वास्तव में फल में उपस्तिथ एन्टी आक्सीडैन्टस शारीर के अन्दर पैदा होनेवाले नुकसान देह तत्वों - फी रेडिकल्स के दुष्प्रभाव को कम करते है। एन्टीआक्सीडेन्ट बदती उम्र में शरीर के क्षीण होने की प्रक्रिया को भी धीमा करते है । एकडाइटीशियन के अनुसार अपने देश में सदियों से पारम्परिक भोजन में बहुरंगी फलो । सब्जियों से हमें कैरी टीनाइड लाइकोपीन मिलता है । जो ह्रदय व् फेफड़ो की बीमारी की रोकथाम में सहायक सिद्ध होता है । आजकल के जंक में बहुरंगी खादय पदार्थो का सेवन नहीं हो रहा है ।

रंगीन फलाहारो का शरीर में उत्तम प्रभाव :

1) -लाल व पर्पल फल - इस प्रकार के फलो में कुदरती एन्थोवनिन्स नामकशक्ति शक्तिशाली एन्टीआक्सीडेन्ट प.ाये जाते है । ये एन्टीआक्सीडेन्ट रक्त में थक्को (क्लाट्स) को नहीं बनने देते है । इस कारण ह्रदय रोंगों में जोखिम कम हो जाता है । पर्पल कलर के फलो में कैंसर रोधी तत्व पाए जाते है। लाल रंग के फलो के फाइबर, अमेगा -3 व् एन्टीआक्सीडेन्ट व् लाइकोपीन कोलेस्ट्राल स्तर को भी कम करते है।

2) - सफ़ेद रंग के फल - इस रंगों के फल। सब्जी से फ़्लैबोनाइड्स व् एलीसिन नामक तत्व पाये जाते है जो कोशिका? को न नष्ट होने से बचाते है ।

3)- पीला रंग के फल - पीले रंग के फल रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते है। क्योंकि इनमे बीटा क्राइपटाक्सैनथिंन नामक एन्टीआक्सीडेन्टस पाया जाता है । जो कोशिकओं को नष्ट होने से बचाते है और नेत्रों को सेहत प्रदान करते है । पीले रंग फलो में बिटामिन सी पर्याप्त मात्रा में पाये जाते है । जो शरीर के प्रतिरोधक तंत्र को मजबूत करते है । विटामिन सी की पर्याप्त मात्रा से दांतों की सुरक्षा होती है ।

4)- हरा रंग के फल - हरा रंग इस बात का सूचक है क़ि अमुक पदार्थ आयरन से परिपूर्ण है । हरे रंग से फलो में ल्यूटीन और जियोजेन्थिंन नामक तत्व पाये जाते है । जो नेत्रों को स्वस्थ रखने में सहायक होते है । इस प्रकार के फलो में बिटामिन बी व् सी होते है । जो मानसिक तनाव को कम करते है।

5)-नारंगी रंग के फल ------ इस रंग के कुदरती फल बिटामिन ए से परिपूर्ण होते है । इनमे बीटा कैरोटिन भी पर्याप्त मात्रामेंपाया जाता है । जो नेत्रों व् त्वच्या को स्वस्थ रखने में सहायक है । इसमे आस्टीयोथेरीसिस हड्डी सम्बन्धी रोगों के खतरे को कम करता है । पीले - - नारंगी रंग के फलो सेवन से जुकाम व् ठन्ड से बचाव होता है ।

स्वास्थ बनाना है तो, कोई एकमात्र फल या सब्जी आप क़ि स्वास्थ सम्बन्धी आवश्यकता? पूरा नहीं कर सकती। इसलिए अलग अलग किस्म के मौसमी फल खाना बहुत जरुरी है । आइये जाने किस फल में कौन -कौन से पोष्टिक तत्व पाये जाते है और उनके सेवन से क्या फायदे है ।

आंवला :

औषधीय गुणों से भरपूर आंवले में बिटामिन सी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है ।साथ ही कैल्शियम, फासफोरस, लोहा और बिटामिन बी क़ि भी बहुलता होती है ।होती है । एंटीआक्सीडेंट गुणों के कारण रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढाता है । आंवला ताजा हो या सुखाया हो इसके गुण सदैव बिद्यमान रहते है ।

यह पाचन को दुरुस्त रखता है । मधुमेह रोगियों को शुगर (शर्करा)नियन्त्रित करने में मददगार होता है । आंवले का रस पीनेसे पेट के कीड़े नष्ट हो जाते है । इसके चूर्ण व् चीनी की बराबर --- बराबर मात्रा में पानी के घोल के साथ पीने से एसिडीटी में राहत मिलती है । मुंह में छाले होने पैर ऑवले के पत्तों के काढ़े से कुल्ला करे शीध्र फायदा होगा । गुदे को शहद के साथ लेने से हिचकियाँ आना बन्द हो जाती है । आवालें के नियमित सेवन करने से बाल काले व् चमक भी बढ़ती है । शहद के साथ ऑवले के रस को मिलाकर पीने से ऑखों की ज्योति ,तीब्रता से बढ़ती है । जी मीचलने पर ऑवले और अदरक क रस शहद के साथ चाटें फायदा होगा।

पपीता : सेहत का खाजाना कहा जाने वाला वाला पपीता खाने में स्वादिष्ट पाचक तथा भूख बढ़ाने वाला होता है । इसमे बिटा मिन ए, सी, डी, इ और बीटा कैरोटिन होता है । पपीता में पाया जाने वाला ' पपेन' एन्जाइम पाचन के लिए बहुत ही उपयोगी है यह लीवर के लिए भी फायदेमंद है । पपेन इन्जाइम् प्रोटीन का पाचन करता है । पपीते में मैजूद बिटामिन ए त्वच्या और आँखों के लिए बहुत ही उपयोगी है । प्रचुर मात्रा में रेशा होने से यह ह्रदय रोगिंयो तथा डायबीटीन के मरीजो के लिए फायदेमंद है । सुबह खाली पेट खाने से हाइब्लुडप्रेशर नियंत्रित रहेगा । नाश्ते में पपीता खाकर ढूध पीने से कब्ज की शिकायत दूर होती है । जोड़ो के दर्द से पीड़ित व्यक्ति को हेर संम्भव रोजाना पपीता खाना चाहिए । सर्दी - जुकाम से भी परेशांन रहने वाले व्यक्ति को हेर सम्भव रोजाना पपीता खाना चाहिए । सर्दी- जुकाम से भी परेशान रहने वाले व्यक्ति को पपीते के नियमित सेवन करने से प्रतिरक्षा तन्त्र मजबूत रहता है । पपीता खाने से महिलाओं के मासिक चक्र को नियमित करता है ।

केला : केला स्वादिष्ट और पौष्टिक गुणों से भरपूर होता है । इस फल में विटामिन ए, सी, वी, और पोटयाशियम , मैगनिशियम व् आयरन पाया जाता है । दौड़ भाग से थके व्यक्ति को नाश्ते में जरुर शामिल करना चाहिए । तुरन्तउर्जा प्रदान करता है ।आलस्य और स्तुस्ती को भी दूर करने में यह फल मददगार है। पर्याप्त में फाइबर और प्राकृतिक सुक्रोज , फ्रक्टोज और ग्लूकोज भी पाया जाता है ।

केला ब्लड प्रेसर को नियन्त्रित करता है और गुर्दे से अवांछित पदार्थे को भी बाहर निकालने में मदद करता है । केले के सेवन से तनाव व् चिन्ताग्रस्त से छुटकारा मिलाती है । चूँकि केले में लौह तत्व भी पर्याप्त मात्र में पाया जाता है ।इसके खाने से ब्लुड में हीमोग्लोबीन बनने की किया को तेज करता है जिससे एनीमिया, खून कमी होने का खतरा कम हो जाता है । केला खाने से याददास्त तेज होती है तथा कब्ज की शिकायत दूर होती है । इसके सेवन से महिलाओं को माहवारी के दर्द में आराम रहता है । पोटयाशियम , तत्व से भरपूर होने के नाते रक्त संचार सुचारू रूप से होता है ।जिससे स्ट्रोक पड़ने का खतरा कम हो जाता है ।

जामुन : यग्द दाश्त को बढाने वाला इसका फल मीठा तथा स्वास्थ के लिए बेहद फायदेमन्द है । इस फल में लौह , काबीहाइड्रेट , प्रोटीन फासफोरस, कैल्शियम और बिटामिन बी पाया जाता है । जामुन की गुठली, पत्ते और छाल भी औषधीय गुणों से भरपूर होता है

। अन्य फलो की अपेक्षा इसमे कम कैलोरी होती है ।

इसका सिरका पिने से पेट से संम्बधित परेशानी दूर हो जाती है । रक्त को साफ करने में कम करता है । पथरीके रोगियों के लिए लाभदायक है। खून की कमी (एनीमिया) के रोगी के लिए लाभदायक है । जामुन का रस शहद और ऑवला का रस बराबर मात्र में मिलाकर लेने से रक्त की कमी दूर हो जाती है । कैंसर, मधुमेह , रुदय रोग व् अर्थराइटिस में काफी फायदेमंद है ।

जामुन को हमेशा खाना खाने के बाद खाये तो अछ्या रहेगा । परन्तु यह ध्यान रहे की जामुन खाने के बाद दूध कदापि न पिये ।

कहावत है रोज एक सेब खाओ डाक्टर से हमेशा दूर रहो । शारीर को चुस्त- दुरस्त रखने व् याददास्त बढ़ाने में सहायक होता है । इसमे खनिज ,बिटामिन और फाइबर प्रर्याप्त मात्रा पाया जाता है । सेब के छिलके में पैक्टीन नामक रसायन पाया जाता है । जो कोलेस्ट्राल और ब्लड शुगर का स्तर कम रखता है । अतः छिलका रहित खाना फायदेमन्द है । यह एंटीआक्सीडेंट का प्रमुख श्रोत है। डाक्टर की राय में रोज एक सेब खाने से पाचन किया टिक रहती है । बिटामिन से भरपूर यह फल कोलोन, प्रोस्ट्रेट, फेफड़ो का कैसर कोलेस्ट्राल बढ़ने का खतरा कम करता है । शरीर में खून की मात्रा के साथ ही हिमोग्लोबीन का स्तर बड़ता है। विषाक्त पदार्थो को भी बाहर निकालने में मददगार होता है । दात व् मसूढ़ों को साफ तथा ओंखो को भी स्वस्थ रखता है । प्रतिरक्षा तंत्र मजबूत तथा शरीर की कमजोरी भी दूर होती है । कच्च्या सेब खाने से कब्ज की शिकायत दूर होती है ।

संतरा : स्वाद से भरपूर संतरे में बिटामिन ए, बी , सी के अलावा फास्फोरस, कैल्शियम और ग्लूकोज भी पाया जाता है । अतः इसका रस सेहत के लिए स्वास्थ्य बर्धक होता है । स्वाद से भरपूर संतरे में बिटामिन ए, बी , सी के अलावा फास्फोरस, कैल्शियम और ग्लूकोज भी पाया जाता है । अतः इसका रस सेहत के लिए स्वास्थ्य बर्धक होता है ।

संतरा का जूस पीने से प्रतिरक्षा तंत्र मजबूत होता है। इसके सेवन से खाना जल्द पचता है तथा कब्जियत दूर करनेके साथ पेट -- दर्द मे आराम देता है । कमजोरी मे संतरे का रस बहुत ही फायदे मंद होता अहै।वजन को नियंत्रित करत है ।लू व सर्दी लगने का खतरा कम रहता है ।करता है ।साथ ही दात भी कै प्रकार की बीमारियों से सुरक्षित रहते है ।

ध्यान रहे कि संतरे में कैलोरी की अधिक मात्रा होने से बहुत अधिक मात्रा में सेवन न किया जाय । खाना खाने के तुरन्त पहले व तुरन्त बाद जूस का सेवन नन्न करे, अच्छा रहेगा । एसिडीटी के मरीज संतरे का सेवन न करे ।

आम : फ़ल का राजा कहा जाने वाला आम, स्वाद में मीठा तथा प्रचुर मात्रा में पोटैशियम और लौह पाया जाता है ।इसके अतिरिक्त इसमे बिटामिन सी और ई भी मौजूद है । आँखों के लिए फायदे मन्द है । इंस्टेंट उर्जा व एंटीआक्सीडेन्ट का अच्छा स्त्रोत है । एनीमिया और गर्भवती महिलाओं के लिये विशेष फायदेमन्द है । भुने हुए कच्च्या आम का पाना बनाकर सेवन करने से लू से बचा जा सकता है ।

अनानास: शुकगुजार है अनानास जो अनावश्यक चर्बी को घटाताहै । यह स्वाद में खट्ठा-मीठा होने का साथ स्वास्थ के लिये भी फ़ायदेमंद है । इसमे कैल्शियम, मैग्नीशियम और बिटामिन सि पाया जाता है । अनानास में पाया जाने वाला ब्रोमिलन तत्व शारीर की अतिरिक्त कैलोरी को चर्बी में न बदलकर आपके वजन और आकार को नियमित रखता है । इसमे प्रचुर मात्रा में कैल्शिअम और मैग्नीशियम पाये जाने से हड्डियाँ मजबूत बनती है । और शारीर को उर्जा मिलाती है।

अनानास में ब्रोमिलन की उपस्थिति से सर्दी - खाँसी, सूजन, गले की खराश और गठिया रोग मे फ़ायदेमंद होता है ।यह पाचन क्रिया में भी उपयोगी है । इसके फल के सेवन से विशेषतौर से बढ़ती उम्र के साथ कम होती ऑखो की ज्योति का खतरा कम हो जाता है । वैज्ञनिक शोध के मुताबिक यह फल कैंसर के खतरे को कम करता है । अनानास में बिटामिन सि की प्रचुरता से शारीर की प्रतिरोधक क्षमता को बुद्धि कर ठंडी के मौसम में सर्दी व अन्य संकामक बिमारियों के खतरे से बचाता है .।

नारियल: कहा जाता है कि नारियल खायें, मोटापा घटाये । स्वास्थ के लिए फ़ायदेमंद इसमे पौटैशियम,कैल्शियम, मैग्नीशियम, फाइबर बिटामिन ए बी और सी बिटामिन ए , बी और सी बिटामिन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है । इसमे कोलेस्ट्राल और वसानहीं पाया जाता है । अतः मोटापे कि समस्या से जूझ रहे लोगो के लिए इसका सेवन फ़ायदेमंद है ।

यह फल शारीर को तुरन्त उर्जा प्रदान करता है । रक्त में ग्लूकोज कि मात्रा की मात्रा को संतुलित बनाये रखता है । जिससे मधुमेह का खतरा घटाता है । इसके सेवन से पाचन किया दुरुस्त रहती है । यह दाद, चेचक, इन्फलूएंजा और हेपे टाइटिस सी जैसी बिमारियों के वाइरस को ख़त्म कर देता है । हड्डियों और दातो को मजबूत बनता है । यह गुर्दे के स्टोन को गलने में मदद करता है । नारियल शारीर पर पड़ने वाले झुरिन्यो और शिथिल पड़ती त्वचा के लिए उपयोगी है । उलटी आने पर नारियल के पानी का सेवन बहुत ही लाभकारी होता है । दिल के मरीजो के लिए काफी फ़ायदेमंद है । कोलेस्ट्राल के अनुपात को सुधार कर दिल की बीमारी के खतरों को कम करता है । यह पेट की गैस की समस्या में लाभदायक है ।नारियल के तेल का उपयोग कई आयुबेर्दिक दवाओ के बनाने में होता है ।

अमरूद: भारत वर्ष के लगभग सभी क्षेत्रो में पाया जाने वाला अमरूद का फल मीठा, सुगन्धित एवम स्वादिष्ट होता है । बिटामिन सी की प्रचुरता के कारन पेट सम्बन्धी गड़वदिडियों को दूर करता है । अमरुद में पेक्टिन पाया जाता है जो पेट के लिए फायदेमन्द होता है ।

अनार: यह स्वास्थ के लिए काफी फायदेमन्द होता है । इसमे बिटामिन ए ,सी, ई व आयरन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है ।बिटामिन की प्रचुरता के कारन यह बहुत उपयोगी है । यह पेट की गड़बड़ी, कैंसर, दिल समन्धी रोगों, हाईब्लुडप्रेसर और एनीमिया के उपचार में अनार फायदेमन्द होता हाई । इसके अलावा सूजन, जलन और जोड़ों के दर्द कम करने में मददगार होता है ।

अनार में फ्लेवेनाइडस नाम का एन्टीआक्सीडेन्ट पाया जाता है जो कैंसर के खतरे से बचाता है । एन्टीवैक्तिरियल और एन्टीवायरल गुण के कारन अन्नर का जूस दांतों से जुडीसमस्या के निदान में कारगर है ।

अनार के फुल को छाया में सुखाकर, बारीक़ पीसकर दन्त मंजन बनाया जा सकता है । जो दांतों से निकलने वाले खून को बन्द कर सकता है ।

आणू बुखारा:

पहाड़ों पर पाया जाने वाला यह प्रमुख फल है । जिसे लोग बड़े चाव से पसन्द करते है । आणू बुखारा में आयरन, एन्टीआक्सीडेन्ट और पोष्टिक तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते है । जो बीमारी से बचाते है और कैलोरी कम पायी जाती है । इसलिए मोटापा कम करने में मददगार सावित होता है । यह वसा भी मुक्त होता है । यह ब्रेष्ट कैंसर रोकने में मददगार व डायबिटिज के रोगी भी इसे खा सकते है । इसके नियमित सेवन करने से ऑंखो की रोशनी तेज होती है । यह ह्रदय रोग से बचाता है और खून को साफ करता है ।

खजूर: हिमोग्लोबिन की कमी को जल्द पूरा करने वाला कुदरती पौष्टिक गुणों से भरपूर एस फल में फाइबर , कैल्शियम, आयरन, सल्फ़र, पोटेशियम, फासफोरस, मैगनिशियम और न जाने कितने पोषक तत्व पाये जाते है । इसलिए कहा गया है कि एक खजूर खाने का मतलब पुरे दिन का संतुलित और पर्याप्त आहार ले लिया है । इसकी सबसे बड़ी विशेषता है । कि यह बहुत ही जल्द पाच जाता है और शारीर को तुरन्त उर्जा देता है । खजूर में पाये जाने वाले निकोटाइनिक तत्व आंतो कि समस्या होने से बचाता है । ह्रदय रोग वाले व एनिमिया से ग्रसित लोग इसका नियमित सेवन करे तो वेहद लाभ होगा । खजूर स्वस्थ आहर का हिस्सा मन जाता है । इसमे तमाम जरुरी विटामिन, शुगर व फैट पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है । जो वजन बढ़ाने में सहायक होता है । इसमे पोटेशियम भी पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है । जो डायरिया को नियन्त्रित करता है ।

बेल: औषधीय गुणों से भरपूर वेल भारत वर्ष की प्राचीनतम फल है । इसी महानता के कारण इसे धर्म से जोड़कर इसकी पत्तियॉ भगवान शिव को श्रावण मास में समर्पित की जाती है । पोषण की दृष्टी से बेल बहुमूल्य बृक्ष है ।किसी भी फल में इसके बराबर राइबोफ्लेबिंन नहीं होता है । इसके नियमित सेवन से ऑतो में जमा मॉल साफ हो जाता है । इसका हर भाग ।हिस्सा चाहे वो जड़, पत्ता, छाल या तना हो वह औषधीय गुणों से भरपूर होता है । बेल के प्रयोग से पेक्टिक अमु अल्सर , सर्दी - जुकाम, स्थामा,पीलिया एनीमिया व् स्मरण शक्ति क ध्यास समाप्त हो जाता है ।कहा जाता है की दिल व् दिमाग दोनों के लिए तनिक के रूप में कार्य करता है ।

बेल की पूर्ति 100 ग्राम खाद्य भाग मै 80 मिग्रा0 कैल्शिअम 50 मिग्रा0 फासफोरस ,06 मिग्रा 0 लोहा ,31.8 प्रतिशत काबीहाइड्रेट, 25 प्रतिशत रेशा, 8 मिग्रा0 विटामिन सी, 1.8 प्रतिशत प्रोटीन पाई जाती है।

लाखों लोगों के अदभुत अनुभव:

यदि हमें चुस्त-दुरुस्त रहना है, सेहत ठीक रखना है, ज्यादा समय तक जिन है तो हमें कुछ हिन्दुओं पर गहरे से विचार करना होगा। इसे अपनाये औरों को भी सुझाव दें ।

1 -संतुलित आहार ले - एक दिन मै कम से कम 10 गिलास पानी पियें , भोजन मै 4-5 रंगों वाले ताजे फलों ।सब्जियों क असवान करें ।

2 - नियमित व्यायाम करें। हँसना एक व्यायाम है। टहलना सवीतम व्यायाम है ।शारीर श्रम से जी न चुराए । चिंता व् सोच से बचें ।चिंता नहीं चिंतन करें ।

3 - अपनी सोच सकारात्मक रखें।अची किताबे पढ़ें ।बिचार व् इन्द्रिय संय्यम रखें ।

4 - बुढ़ापा रोकने के लिए अच विटामिन सी होता है ।आवला, नीबू , संतरा, अमरूद ,अलोबेरा,(धिक्वार)का जूस सेवन करें।

5 - अरगेनिक रूप से तैयार किये गयें फलों व् सब्जियों का अधिक से अधिक प्रयोग करें।

नर्सरी में कीट व्याधियों का नियन्त्रण

डॉ. पंकज शर्मा
प्रभारी कृषि विज्ञान केन्द्र, बानसूर (अलवर)

सामान्यतः फसलों को सीधे खेत में ही उगाया जाता है परन्तु कुछ फसलें विशेषकर सब्जियां , फल व पुष्प जिन्हें सीधे खेत में न उगाकर नर्सरी में पौध तैयार करके उगाया जाता है। फसल की अच्छी पैदावार व गुणवत्ता हेतु नर्सरी में पौध को स्वस्थ रखना आवश्यक है। कभी कभी नर्सरी में सारी शस्य क्रियाओं का समय पर प्रयोग करने के बावजूद षि पौधे सूखते हुये नजर आते हैं और किसान इसे समझ नहीं पाता जबकि यह विभिन्न कीट व रोगों का प्रकोप रहता है जिनका समय पर रोकथाम आवश्यक है।

प्रमुख रोग : आर्द्रपतन

बीज के अंकुरित होने से पहले मृदा की सतह पर पहुँचने से पहले ही बीजांकुर मर जाते है क्योंकि ऐसा मृदा के भीतर ही होता है जिनसे उत्पादक इसको जान नहीं पाता और वह इसे रोग न समझकर बेकार किस्म का बीज समझ बैठता है।

दूसरी अवस्था में पौध नर्सरी में उग जाती है परन्तु वह शीघ्र ही गिर जाती है ऐसा कवक मृदा तल अथवा इससे नीचे संक्रमण करता है। नर्सरी में रोगग्रसित बीजांकुरों के बड़े–बड़े क्षेत्र के रूप में दिखाई देते है। जब मृदा में नमी की मात्रा मध्य से उच्च तक तथा तापमान अधिक होता है तब रोग उग्र रूप धारण कर लेता है। नियन्त्रण हेतु :

◆बीजों को आर्द्रपतन के प्रथम अवस्था से बचाने के लिये बीजोपचार करें। बीजोपचार के लिये बीजों को कार्बेन्डिजम या थायरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

◆मृदा उपचार भी अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिये एक भाग फार्मलीन को 50 भाग जल में मिलाकर नर्सरी की मिट्टी को चार इंच गहराई तक गीला कर देवें। इसके अतिरिक्त फाइटोलान (0.5 प्रतिशत) अथवा पेरेनाक्स (0.2 प्रतिशत) से भी मृदा को उपचारित कर सकते है।

◆नर्सरी की क्यारियां जमीन से कुछ ऊँची उठी हुई होनी चाहिये जिससे उचित जल निकास हो सके।

◆अच्छी प्रकार से सड़ी हुई खाद प्रयोग करें।

◆नर्सरी में मिट्टी तथा बालू की उचित मात्रा होनी चाहिये।

◆नर्सरी में अधिक बीज की बुवाई न करें।

प्रमुख कीट

दीमक : छोटे आकार का यह कीट जमीन में रहता है और अंदर से ही पौधों की जड़ों को काटकर खाता है जिससे पौधे मुरझाकर सूख जाते हैं। यह कीट पौधे के तने व टहनियों को नुकसान पहुंचाते हैं।

कातरा : मटमैले रंग की इस कीट की लट रात को निकलकर पौधशाला में पौधों को जमीन की सतह से काटकर गिरा देती है।

चैंपा व हरा तैला : पौधों की कोमल पत्तियों , कोंपलों से यह रस चूसता है जिससे उन पर सफेद पीले रंग के धब्बे दिखाई देते हैं व पौधे कमजोर हो जाते हैं। चैंपा पत्तियों व ग्रसित षग पर चिपचिपा पदार्थ छोड़ता है जिससे कई प्रकार की फफूंदी के संक्रमण का ष्य रहता है। ये कीट कई फसलों में विषाणु रोगों के वाहक का काम षि करता है।

तम्बाकू की लट : यह कीट अधि ाकतर खड़ी फसल में नुकसान करते हैं परन्तु नर्सरी में टमाटर, गोभीवर्गीय सब्जियों के पौधों को अपने काटने वाले मुखांगों से काटकर नुकसान करते हैं।

सफेद लट : इस कीट के लारवा नर्सरी व खेत दोनो में पौधों को हानि पहुंचाते हैं। इनकी लटें जमीन में रहती हैं और पौधों की जड़ों को काट देती हैं जिससे पौधे मर जाते हैं।

आरा मक्खी : हरे काले रंग की लटें पौधों की छोटी अवस्था में नुकसान करती है। यह सुबह या शाम के समय पत्तियों को खाती हैं व गोंल छेद बना देती है और अधिक उग्र अवस्था में पौधे को खत्म कर देती है।

उपरोक्त कीटों के अतिरिक्त कई प्रकार की ृंषा, वीवल्स आदि नर्सरी में पौध को क्षति पहुंचाते है।

नियन्त्रण

◆ नर्सरी की क्यारियां जमीन से कुछ ऊँची उठी हुई होनी चाहिये जिससे उचित जल निकास हो सके।

◆ नर्सरी में सफाई का ध्यान रखना चाहिये। समय समय पर निराई गुड़ाई करते रहना चाहिये। खरपतवारों को उखाड़कर नष्ट कर देवें एवं कूड़ा करकट को एकत्रित कर जला देना चाहिये।

◆ नर्सरी में बुवाई से पूर्व गर्मियों में गहरी जुताई करके इसे खुला छोडना चाहिये।

◆ नर्सरी में पौध लगाने से पूर्व मृदा को मिथाइल पैराथियान से उपचारित करें जिससे उसमें उपस्थित अण्डे व प्यूपा खत्म हो जायें।

◆ नर्सरी में उपयोग होने वाले बीजों को इमिडाक्लोप्रिड 2 गांम प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित करें जिससे रस चूसने वाले कीटों से लम्बे समय तक बचाव होता है।

◆ नर्सरी मे खड़े पौधों को पत्ती काटने वाली सुण्डियों से रोकथाम हेतु एण्डोसल्फान या क्विनालफास की 2 मिली. मात्रा एक लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

◆ नर्सरी में दीमक की रोकथाम के लिये क्लोरोपायरीफास को सिंचाई के साथ देवें।

◆नर्सरी के बाहर प्रकाश प्रपंच लगाकर रात्रि में आकर्षित कीटों को नष्ट कर देवें।

मंथन

कृषि क्रांति ?

ऊपरी तौर पर यह प्रतीत हो सकता है कि दुनिया भर के कृषि वैज्ञानिक अपने तौर-तरीकों में बदलाव ला रहे हैं. प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के लिए वे किसानों से सीख ले रहे हैं ताकि कार्यक्षमता, पैसा और पर्यावरण बचाया जा सके. कृषि संरक्षण से आशय है 'टिकाऊ कृषि' को सघन बनाना. गहन खेती को दीर्घकालीन कहना हैरानी की बात है. ऐसे में अगर वे 'दीर्घकालिक कीटनाशक प्रयोग' के नाम पर रासायनिक कीटनाशकों को प्रोत्साहन देना शुरू कर दें तो हैरानी नहीं होगी. गहन कृषि में सुधार के लिए नई मशीनों से कोई लाभ नहीं होगा.

वापस लौटें तो क्या महान कृषि क्रांति से आशय गहन कृषि से नहीं था? क्या इसका उद्देश्य फसल संवृद्धि यानी प्रति इकाई उत्पादकता में वृद्धि करना नहीं था? इसलिए संरक्षित कृषि और हरित कृषि क्रांति में फर्क ही क्या है?

संरक्षित कृषि से आशय है जुताई से छुटकारा. यह अवधारणा न्यूनतम मिट्टी ह्रास, जैव अवशिष्ट कायम रखना और फसल विविधीकरण पर आधारित है. इसका विचार है कि जुताई न करने या न्यूनतम जुताई से मिट्टी खराब नहीं होगी और इस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण हो पाएगा. एक ऐसे देश में जहां केंचुए मिट्टी का अभिन्न अंग हैं, वे प्रकृति के खेतिहर हैं. छोटे से जीवनचक्र में केंचुआ छह टन मिट्टी भुरभुरी कर देता है. तो फिर, भारतीय परिप्रेक्ष्य में जुताई रहित कृषि एक अजनबी शब्द नहीं लगता. जुताई से छुटकारे के अपने उद्योग हैं. कृषि वैज्ञानिकों का प्राथमिक हित ये उद्योग ही हैं. नई संरक्षण प्रौद्योगिकियों में शामिल है लेजर विधि से भूमि समतल करना. फिलहाल यह लेजर मशीन आयात की जा रही है, किंतु इसके कुछ कलपुर्जे भारत में भी बनाए जाने लगे हैं. जुताई रहित प्लांट, जमीन की खुदाई के बिना ही बीज बोने वाले सीडर्स व टबी सीडर्स, मिट्टी तैयार करने वाले डिस्क ड्रिल और कीटनाशकों के इस्तेमाल के लिए विभिन्न प्रकार के उपकरण भी किसानों का इंतजार कर रहे हैं. हमें ऐसी कृषि की जरूरत नहीं है जो बाहरी निवेश पर निर्भर हो. हमें ऐसी खेती नहीं चाहिए जो मिट्टी की उर्वरता व खनिजों को नष्ट करे और भूमिगत जल व पर्यावरण को प्रदूषित करे. हमें ऐसी कृषि नहीं चाहिए जिसमें किसान भिखारी बन जाएं और सेवा प्रदाता चांदी कूटें

यह एक यथार्थ है कि देश में 60 प्रतिशत कृषि योग्य भूमि सूखे की मार झेल रही है. इससे निपटने के लिए वही घिसे-पिटे तौर-तरीके अपनाए जा रहे हैं जो विफल हो चुके हैं. ऐसे समय जब दुनिया भर में यह सोच विकसित हो रही है कि रासायनिक खेती ने मिट्टी की सेहत बिगाड़कर रख दी है और कृषि को विनाश के कगार पर पहुंचा दिया है, यह समझ से परे है कि भारत के योजनाकार एक दोषपूर्ण प्रौद्योगिकी से भारतीय कृषि का पुनरुद्धार करने की आशा कैसे पाल रहे हैं? हमें जिस चीज की फौरी जरूरत है वह है नजरिए में बदलाव लाना और किसानों व गैर-सरकारी संगठनों की बात पर ध्यान देना, जो कृषि के पुनरुद्धार के लिए जीजान से जुटे हैं

ऋतु कपिल

कार्यकारी संपादक

मिर्च की फसल में कीट एवं रोग प्रबन्धन

राम गोपाल सामोता', डॉ. बी.एल. जाट' एवं मंगलाराम बाज्या''

(कीट विज्ञान विभाग)

'श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय जोबनेर

''इंस्टीट्यूट ऑफ पेस्टीसाईड फार्मूलेशन टेक्नोलॉजी, गुडगाँव (हरियाणा)

मिर्च एक नकदी मसाला फसल है। भारत मिर्च का प्रमुख उत्पादक, निर्यातक एवं उपभोक्ता है, मिर्च एक ऐसा खाद्य पदार्थ है जो सब्जी, मसाले एवं औषधीय जड़ी–बूटी व सजावटी पौधे के रूप में अरबों लोगों द्वारा प्रयोग की जाती है। इसका एक घटक के रूप में औद्योगिक उत्पादों में भी प्रयोग किया जाता है।

कीट :–

1.थ्रिप्स :– इनके शिशु एवं वयस्क दोनों ही हानि पहुँचाते हैं। यह पत्तियों के हरे भाग को खरोंच कर खाते है, जिससे पत्तियों पर धब्बे पड़ जाते है। यह फूल एवं कोमल तनों का रस भी चूसते हैं, फलस्वरूप पत्तियाँ, फल एवं कलियाँ सिकुड़ जाती हैं। इसके अधिक प्रभाव से पौधों की बढ़वार रूक जाती है।

इनके प्रभाव से विषाणु बीमारियाँ भी मिर्च में फैलती हैं। थ्रिप्स का प्रभाव ऐसे खेतों मं अधिक होता है जहाँ खेत सूखे होते हैं।

नियंत्रण :–

थ्रिप्स के नियंत्रण के लिए इमीड़ाक्लोप्रिड़ (2 मि.लि./10ली.) के छिड़काव से अच्छे परिणाम मिले हैं।

इसके नियंत्रण के लिए इमामेक्टिन बेंजोएट का छिड़काव 2ग्रा./10 लि. की दर से करें। एन.पी. 46 ए नामक किस्म उगानी चाहिए क्योंकि यह थ्रिप्स की प्रतिरोधी किस्म हैं।

आक्रमण होने पर मोनोक्रोटोफास 36 एस.एल. या मिथाइल डिमेटान 25 ई.सी. का 1 मि.लि. प्रति लिटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

2.चेपा :– यह पंखदार तथा पंखविहीन दोनों ही प्रकार के छोटे हरे पीले रंग के कीट होते हैं पंखदार चेंपे में धारियाँ भी पाई जाती है। इसके लार्वा एवं प्रौढ़ पौधों के विभिन्न भागों में से रस चूसकर पौधों के विकास एवं बढ़वार को प्रभावित करते है। प्रभावित पौधों की पत्तियों में पीले और हरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं। पौधों पर फूल एवं फल कम लगते हैं। पौधे छोटे एवं झाड़ीनुमा हो जाते है। ये पौधों में विषाणु जनित रोग भी फैलाते हैं।

नियंत्रण :–

चेंपे की रोकथाम थ्रिप्स कीट की तरह करें। इसके अलावा मेटासिस्टाक्स (2 मि. ली./ली.) या रोगर 0.025 प्रतिशत या मेलाथियान (2 मि.ली./ली.) के घोल के छिड़काव से भी अच्छे परिणाम मिले है।

कार्बेरिल (5प्रतिशत) या मैलाथियॉन (5 प्रतिशत) चूर्ण का 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव करें।

मोनोक्रोटोफास (40 ई.सी.) 500–600 मिलि या फॉस्फोमिडान (85 एस.एल.) 200–250 मि.लि. के 800–1000 लिटर घोल का छिड़काव करें।

3.फल छेदक :– इस कीट की सूंडियाँ फलियों में छिद्र करके उनके अन्दर प्रवेश कर जाती हैं और फलियों को खाती रहती हैं। कभी–कभी यह कीट पौधों की कोमल शाखाओं को भी काट देता है।

नियंत्रण :–

फल छेदक के नियंत्रण के लिए स्पाइनोसैड़ (2 मि.ली./10 ली) या नोवालूरॉन (1 मि.ली./ली.) का छिड़काव करें।

इसके नियंत्रण के लिए इमामोक्टिन बेंजोएट का छिड़काव 2 ग्रा./10 लि. की दर से करें। इस कीट के नियंत्रण हेतु सेविन के 0.2प्रतिशत घोल का छिड़काव करना चाहिए। घोल का दूसरा छिड़काव 12–15 दिन बाद करें। फलियों को तोड़ने के उपरान्त छिड़काव करना चाहिए और फिर छिड़काव के 5–7 दिन बाद ही फलियाँ तोड़ लेनी चाहिए।

4.माइट :– इस कीट की कई प्रजातियाँ मिर्च की पत्तियों को खाकर फसल को क्षति पहुँचाती है। इसके शिशु एवं वयस्क दोनों ही हानिकारक हैं जो अपने थूक से पत्तियों पर जाला सा बुनकर हरा पदार्थ खाते रहते हैं। इन जालों मं हजारों की संख्या में माइट मिलती है। इसके प्रभाव से पत्तियाँ टेढ़ी भी पड़ जाती है

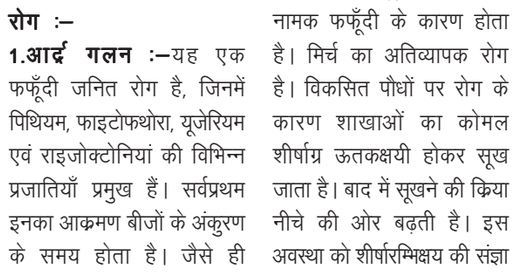

और उन पर धब्बे पड़ जाते है। फलस्वरूप बहुत हानि होती है।

नियंत्रण :–

इस कीट के नियंत्रण हेतु डाइकोफाल 18.5 ई.सी. का 1.0–1.3 लिटर 625 लिटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। यदि आवश्यक हो तो दूसरा छिड़काव 10–15 दिन बाद करें। माइट को ओमाइट (2 मि. ली./ली.) के छिड़काव से नियंत्रित किया जा सकता है।

माइट के नियंत्रण के लिए इमामेक्टिन बेंजोएट का छिड़काव 2 ग्रा./10 लि. की दर से करें।

रोग :–

1.आर्द्र गलन :–यह एक फफूँदी जनित रोग है, जिनमें पिथियम, फाइटोफथोरा, यूजेरियम एवं राइजोक्टोनियां की विभिन्न प्रजातियाँ प्रमुख हैं। सर्वप्रथम इनका आक्रमण बीजों के अंकुरण के समय होता है। जैसे ही बीजांकुर बीज से बाहर आता है। इनके प्रकोप के कारण सड़ जाता है। यदि इनसे बचकर भूमि के ऊपर आ जाता है तो तने की भूमि के समीप वाले भाग पर जलसिक्त दिखाई पड़ता है, जिसमें सड़न होने लगती है, जिससे बीजांकुर गिर जाते हैं।

नियंत्रण

बीज को बोआई से पूर्व 2–3 ग्राम कैप्रान या थाइरम प्रति किलोग्राम बीज दर से उपचारित करके बोएं।

पौधशाला की भूमि को 15 सेमी. रखें ताकि फालतू पानी का निकास हो जाए।

पौधशाला में बीज बोने से पूर्व 4–5 ग्राम प्रति वर्ग मीटर की दर से कैप्रान या थाइरम मिलायें।

बीज घने न बोएं।

सिंचाई हल्की एवं बार–बार करें।

ब्लाइटौक्स – 50 एक किलोग्राम प्रति 300 लिटर पानी में मिलाकर या डाईफोलेटान 0.2प्रतिशत का छिड़काव करें एवं मिट्टी को दवा से भिगोऐं।

2.श्यामव्रण (एन्थ्रक्नोज) :– यह रोग कोलेटोट्राइकम कैप्सीसी नामक फफूँदी के कारण होता है। मिर्च का अतिव्यापक रोग है। विकसित पौधों पर रोग के कारण शाखाओं का कोमल शीर्षाग्र ऊतकक्षयी होकर सूख जाता है। बाद में सूखने की क्रिया नीचे की ओर बढ़ती है। इस अवस्था को शीर्षारम्भिक्षय की संज्ञा दी जाती है। फलों पर यह रोग पकने के समय लगता है। जब फल लाल होने लगते है उन पर छोटे–छोटे काले और धब्बे दिखाई देते है। ये धब्बे फल की लम्बाई में बढ़ते है। बाद में इनका रंग धूसर हो जाता है। अन्तिम अवस्था में फल काले होकर गिर जाते हैं।

नियंत्रण :–

स्वस्थ एवं प्रमाणित बीज बोना चाहिए।

बीज बोने से पूर्व कैप्टन या सेरेसान से उपचारित कर लेना चाहिए।

फसल से समय–समय पर रोगी पौधे उखाड़ते रहें और फसल अवशेषों को जला दें।

ब्लॉइटाक्स–50 के 0.2–0.3 प्रतिशत घोल का फसल पर प्रति सप्ताह छिड़काव करें।

फसल–चक्र अपनाने चाहिए।

3.चूर्णी फफूँदी :– यह एक फफूँदी जनित रोग है। रोग के लक्षण सर्वप्रथम सामान्यतः पत्तियों की ऊपरी सतह एवं नये तनों पर सफेद चूर्ण धब्बों के रूप में दिखाई पड़ते है। धब्बों पर उपस्थित चूर्ण टैल्कम पाउडर से मिलता–जुलता होता है।

नियंत्रण :– कैराथेन (0.05 प्रतिशत) या कैलिक्सिन (0.2 प्रतिशत) का प्रत्येक सप्ताह छिड़काव करें।

4.फल विगलन :– यह रोग फाइटोफथोरा नामक फफूँदी के कारण होता है। फलों पर प्रारम्भ में पीले भूरे रंग के संकेन्द्र वलभयुक्त धब्बों के रूप में होता है। फल मृदु विगलन से नष्ट हो जाते है।

नियंत्रण :–

उपयुक्त फसल चक्र खरपतवार नियंत्रण और पानी का उचित जल निकास इस रोग के नियंत्रण हेतु नितान्त आवश्यक है।

प्रति सप्ताह डाइथेन एम–45 (0.2 प्रतिशत) घोल का छिड़काव करना चाहिए।

5.जीवाणु धब्बा :– यह रोग ''जैन्थोमोनास बेसिक्टोरिया'' नामक जीवाणु के कारण होता है। पत्तियों पर धब्बे छोटे, उठे हुए, भूरे, पहले चिकने व बाद में खुरदरे हो जाते हैं। रोगग्रसित पत्तियाँ पीली पड़कर गिर जाती है। संक्रमण बचे फलों पर भी होता है।

नियंत्रण :–

बोने के लिए बीज स्वस्थ फसल से लेना चाहिए।

बीज को बौने से पूर्व 2.5 ग्राम एग्रोसान/किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करना चाहिए।

खेत में खरपतवारों का नियंत्रण करें।

रोग के लक्षण दिखाई देते ही स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 200 मि.लि. प्रति लिटर पानी में घोलकर 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

6.पर्ण संकुचन :– मिर्च की फसल को सब से अधिक क्षति पहुँचाने वाला रोग है। रोग के प्रकोप के कारण पत्तियाँ सिकुड़कर मुड़ जाती है वे छोटी रह जाती है। और इनमें झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, पूरा पौधा बौना रह जाता है, यह रोग सफेद मक्खी द्वारा होता है।

नियंत्रण :–

रोग ग्रसित पौधों को उखाड़ कर जला दें।

रोग वाहक कीटों को नष्ट करने हेतु 0.1 प्रतिशत मैलाथियान, डाईजिनॉन, मेटासिस्टाक्स आदि का 7 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

दानेदार कीटनाशक कार्बोयूरान 1.5–3.0 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर पौध रोपण से पूर्व मिट्टी में मिलाएँ।

7.मौजेक विषाणु :– इस रोग के कारण पत्तियों पर गहरे व हल्के हरे पीलापन लिए धब्बे बन जाते हैं। इस रोग को फैलाने में रस चूसने वाले कीट सहायक होते है।

नियंत्रण :–

बोने के लिए स्वस्थ बीज का प्रयोग करें।

खेत और पौधशाला की भूमि से रोगी फसल के अवशेषों को एकत्र करके जला देना चाहिए।

रोग–रोधी किस्में ही उगाएँ।

रोगवाहकों के नियंत्रण हेतु पर्णकुंचन रोग की तरह ही कीटनाशक दवाइयों का उपयोग करें।

मिट्टी की जॉच और उसके फायदे

डा0 वेद प्रकाश,

प्राध्यापक ;मृदा विज्ञानद्ध

नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,

कुमारगंज, फैजाबाद ;उ०प्र०द्ध

मिट्टी की जॉच क्यों आवश्यक

मिट्टी की जॉच से भूमि में उपलब्ध आवश्यक पोषक तत्वों का पता चल जाता है।

1. मिट्टी उस फसल के लिये उपयुक्त है या नही, जिसकी खेती करने जा रहे हैं।

बोने वाली फसल में कौन सी खाद/उर्बरक की कितनी मात्रा प्रयोग करनी चाहिये।

2.

चाहिये।

3.मिट्टी को किसी भूमि सुधारक की आवश्यकता है या नही। यदि है तो किस भूमि सुधारक की और कितनी मात्रा में।

जॉच हेतु मिट्टी का नमूना कैसे लें :–

1.जिस खेत का नमूना लेना हो उसमें 8–10 स्थानों पर निशान लगा लें।

2.प्रत्येक निशानदेह स्थान के ऊपरी सतह से घास–फूस, कंकड–पत्थर आदि साफ कर लें।

3.निर्धारित स्थान पर खुरपी या फावडे से ट आकार का 15 से0मी0 गहरा गड्ढा खोद लें।

4.गड्ढे से फालतू मिट्टी निकालकर खुरपी की सहायता से उसकी एक दीवार से लगभग 2 सेमी मिट्टी की परत निकाल लें या मृदा नमूना बर्मे से नमूना एकत्र कर लें।

5.इस मिट्टी को साफ सुथरे ट्रे, तसले या बोरी पर रख लें।

6.इसप्रकार खेत के बाकी 8–10 निशानदेह स्थानों से भी मिट्टी का नमूना ले लें। एक खेत के सब नमूनों को एक जगह इकट्ठा करके आपस में अच्छी तरह मिला लें।

7.ऊसर भूमि या फलों की खेती हेतु विभिन्न गहराई 0–15, 15–30, 30–60 एवं 60–100 से0मी0 से अलग–अलग नमूने लेना चाहिये।

8.मिले हुये नमूनों की मिट्टी में से घास–फूस, जडें, कंकड–पत्थर निकाल लें और साफ मिट्टी को तसले या बोरी पर मोटी तह में फैला लें।

9.फैलाई गयी मिट्टी को चार बराबर भागों में बॉट लें। आमने–सामने के दो भागों की मिट्टी को रख कर बाकी फेंक दें।

10.इस प्रक्रिया को तब तक दोहरायें जब तक मिट्टी का कुल नमूना लगभग 500 ग्राम न रह जाय।

मिट्टी की जॉच के फायदे :–

◆भूमि में उपलब्ध नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, सल्फर, जिंक आदि तत्वों और लवणों की मात्रा तथा पी0एच0 मान का पता चलता है।

◆उर्बरकों के संतुलित प्रयोग में मदद मिलती है जिससे भूमि की उपज क्षमता बनी रहती है तथा खेती में कम लागत से अधिक उपज प्राप्त होती है।

◆भूमि में किसी भूमि सुधारक रसायन जैसे कि ऊसर भूमि के लिये जिप्सम/पाइराइट और अम्लीय भूमि के लिये चूने की आवश्यकता का पता चल जाता है।

मिट्टी परीक्षण सही उपाय। कम लागत से ज्यादा आय।।

मिट्टी नमूना लेते समय सावधानियॉ :–

गीली मिट्टी से नमूना नही लेना चाहिये।

जहॉ खाद का ढेर, मेड, नाली या पेड हो वहॉ से नमूना नहीं लेना चाहिये।

मेंड से लगभग 1.50 मीटर हटकर खेत के अन्दर से नमूना लें।

ऊँची–नीची जगह से नमूना नही लेना चाहिये।

ऊसर, सामान्य या अम्लीय भूमि का नमूना अलग–अलग लेना चाहिये।

खेत में उगे किसी पेड के जड वाले क्षेत्र से नमूना नहीं लेना चाहिये।

नमूनों को रसायनिक खादों की खाली बोरी पर कदापि न सुखायें।

नमूनों को छाया में सुखायें।

(पाक्षिक राशि फल)

15–03–2014 से

31–03–2014

ज्योतिषाचार्य -पं.जयदत्त व्यास -जयपुर

AJS	उत्तम समय , धन लाभ, यश की वृद्धि का योग बनता है!
BKT	सम्मान , धन लाभ , मित्रों से सहयोग, कई प्रकार के लाभ
CLU	यात्रा योग, धन लाभ , अधिकारियों द्वारा कष्ट!
DMV	धन हानि , विरोधी प्रबल ,कष्टपूर्ण समय
NEW	आर्थिक मानसिक कष्ट, व्यापार में नुकसान की सम्भावना
FOX	शारीरिक कष्ट ,उद्देगनपूर्ण समय,सावधानी रखें धन धर्म ,लाभ, मित्रों से सहयोग , धन लाभ का योग,
GPY	समय कष्टकारक , मानसिक कष्ट, धन हानि का योग
HQZ	पारिवारिक, आर्थिक मानसिक कष्ट, विरोधी प्रबल
IR	मानसिक कष्ट, भाई बन्धुओ में विरोध,रक्त पीड़ा

सुवचार

सफल व्यक्ति होने का प्रयास न करें,
अपितु गरिमाममय व्यक्ति बनने का प्रयास करें.

अल्बर्ट आईसटीन

खुद को बेहतर बनाने के लिए इतना समय दें कि आपके पास दुसरों की बुराई करने का समय ही न बचे।

सूचना

पाक्षिक समाचार पत्र सृष्टि एग्रो में प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों व लेखो में समाविष्ट सभी बातों की जॉच-परखकर पाना सँभव नही है विज्ञापनों में अपने उत्पादनों अथवा अपनी सेवाओं के बारे में विज्ञापनदाता जो दावे करते है ,सृष्टि एग्रो समाचारपात्र उसकी कोई गारंटी नही लेता. विज्ञापनों में किए गए दावो की पूर्ति यदि विज्ञापनदाता द्वरा नही होती है तो उसके लिए पाक्षिक सृष्टि एग्रो समाचारपत्र समूह के मुद्रा , संपादक ,प्रकाशक व मालिक किसी भी रूप में जवाबदेह नही होंगे,कृपया इसे ध्यान में रखे. अतः हम पाठकों से अनुरोध करते है कि विज्ञापन में उल्लेखित बातों के संदर्भ में कोई भी करार करने के पूर्व उसके बारे में आवश्यक छानबीन कर ले.

खाद्य सुरक्षाः आबादी से ज्यादा लोग चयनित, 84 लाख से ज्यादा मिले नाम

जयपुर. पिछली कांग्रेस सरकार में विधानसभा चुनाव से पहले लागू की गई खाद्य सुरक्षा योजना के तहत पांच जिलों में आबादी से ज्यादा लोग चयनित कर दिए। योजना में 84 लाख नाम ज्यादा जोड़े गए। चुनावी फायदा उठाने की मंशा से अपात्र लोगों का भी इसमें चयन कर दिया गया। हाल ही मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के निर्देश के बाद कराई गई योजना की समीक्षा में यह गड़बड़ी सामने आई। दौसा, डूंगरपुर, धौलपुर, बारां और सवाई माधोपुर जिलों में 2011 की जनगणना में बताई गई जनसंख्या से भी ज्यादा लोगों का चयन कर दिया गया है। जांच में यह भी खुलासा हुआ कि जल्दबाजी में तैयार की गई कई सूचियों में जिम्मेदार अधिकारियों ने हस्ताक्षर ही नहीं कर रखे हैं। अक्टूबर 2013 में लागू किए गए खाद्य सुरक्षा के नए प्रावधानों में एपीएल श्रेणी को पूरी तरह खत्म कर दिया गया। पूरे प्रदेश में निर्धारित 4 करोड़ 46 लाख लोगों की जगह 5 करोड़ 31 लाख लोगों का खाद्य सुरक्षा में चयन कर दिया। दूसरी तरफ लाखों जरूरतमंद और वास्तविक हकदारों को खाद्य सुरक्षा के दायरे में शामिल ही नहीं किया गया। खाद्य सुरक्षा के दायरे में आने वाले व्यक्ति को दो रुपए प्रति किलो गेहूं देने का प्रावधान है। इस तरह की कई गड़बडियां और विसंगतियां मुख्यमंत्री के निर्देश पर गहलोत सरकार के अंतिम छह माह के फैसलों की जांच के दौरान पकड़ में आई हैं। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग की प्रारंभिक जांच में सामने आया कि आयकर चुकाने वाले और चार पहिया वाहन रखने वालों समेत करीब 30 प्रतिशत ऐसे लोगों के नाम फर्जी तरीके से जोड़े गए, जो गरीब नहीं हैं। सामाजिक पेंशन प्राप्त करने वाले सभी लोग इस खाद्य सुरक्षा के दायरे में है। विभाग के सूत्रों के मुताबिक, पिछली सरकार में जल्दबाजी में 84 लाख अतिरिक्त ऐसे लोगों को खाद्य सुरक्षा के दायरे में शामिल कर लिया, जो अपात्र हैं। दूसरी तरफ बड़ी संख्या में ऐसे लोग वंचित रह गए जिनको वास्तव में लाभ मिलना चाहिए था। अब राज्य सरकार आचार संहिता खत्म होने के बाद नए सिरे से पड़ताल कर पात्र एवं सभी हकदार व्यक्तियों को खाद्य सुरक्षा के दायरे में शामिल करेगी।

सामूहिक रूप से कृषि संसाधनों का बेहतर उपयोग करें – डॉ. धीरज सिंह

किसानों को अपने खेत की परिस्थिति और उपलब्ध संसाधनों के अनुरूप ही परम्परागत फसलों, बागवानी फसलों एवं पशुपालन का चयन करके खेतों से आमदनी बढाने का प्रयास करना चाहिए। ग्रामीण कृषि संसाधनों का बेहतर उपयोग करने के लिए किसानों को संगठित होकर विभिन्न कृषि कार्यों को सामूहिक रूप से करना चाहिए ताकि खेती की लागत कम की जा सके। खेती मे आत्मनिर्भर होना जरूरी है । खेती से आमदनी बढाने के लिए वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर प्रति हैक्टेयर उत्पादकता को बढाना होगा। यह बात आत्मा परियोजना, मुरैना (मध्यप्रदेश) द्वारा प्रायोजित एवं सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर द्वारा 3–7 मार्च, 2014 तक आयोजित 5 दिवसीय किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए निदेशालय के निदेशक डॉ. धीरज सिंह ने कही। उन्होनें कहा कि हाल ही में हुई बेमौसम की वर्षा एवं ओलावृष्टि से हुए नुकसान को देखते हुए किसानों को फसल बीमा योजनाओं का लाभ उठाना चाहिए। उन्होनें किसानों से पुरानी किस्मों को बदलकर नई उन्नत एवं अधिक उत्पादन वाली किस्मों को अपनाने का आग्रह किया। इस अवसर पर वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं

प्रशिक्षण समन्वयक डॉ अशोक शर्मा ने किसानों से कहा कि भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए इस निदेशालय के कार्यक्रमों में अपनी सहभागिता कर अपना उत्पादन बढाएँ और राई–सरसों की खेती नवीनतम तकनीकों का प्रयोग करते हुए की जाए। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में मध्यप्रदेश के मुरैना जिले के 35 प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया। सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गये।

किसानों को राहत

जयपुर, लोकसभा चुनाव की घोषणा से पूर्व राजस्थान की वसुंधरा राजे सरकार ने प्रदेश के किसानों और कर्मचारियों को खुश करने के लिए दो बड़ी घोषणा की है। राज्य सरकार ने राजस्थान के सात लाख सरकारी कर्मचारियों को केन्द्र की तरह दस फीसदी डीए देने की घोषणा की है। पेंशनर्स को भी इसका फायदा होगा। इसी तरह दो दिन तक राज्य के विभिन्न जिलों में हुई तेज बारिश और ओलावृष्टि से खराब हुई फसल को मुआवजा देने की भी घोषणा की गई है। प्रदेश के दस हजार गांवों को अभावग्रस्त घोषित करने के साथ ही 50 फीसदी से ज्यादा नुकसान पर असिंचित क्षेत्र के लिए 4500 रुपए प्रति हैक्टेयर मुआवजा देने के साथ ही आबियाना शुल्क माफ करने की घोषणा की गई है। वहीं चार माह बिजली के बिल माफ किए जाएंगे।

गौरतलब है कि पिछले दो दिनों में तेज बरसात और ओलावृष्टि से राज्य के 21 जिलों में सरसों, गेंहू के खेत उजड़ गए, वहीं सब्जियां चौपट हो गई। करीब पौने दस लाख हैक्टेयर में फसल चौपट होने की आशंका है। सरकार ने आंकलन कराना शुरू कर दिया है।

लोकसभा चुनाव के बाद कटेंगे नाम

जयपुर राज्य सरकार योजना में चयनित लोगों की ग्राउंड रियलिटी का लोकसभा चुनाव के बाद पता करवाएगी और जरूरतमंदों का नए सिरे से नाम जोड़ेगी। ग्रामीण क्षेत्र में 1500 स्क्वायर फीट और शहरी क्षेत्र में एक हजार वर्ग फीट के पक्के मकान वालों का नाम काटा जाएगा। आयकर दाता और चार पहिया वाहन वाले लोगों के नामों को सूची से बाहर किया जाएगा। रसद विभाग के आला अफसरों की मानें तो 30 प्रतिशत नाम ऐसे लोगों के हैं।

6.40 लाख रुपए किए खर्च तो हटने लगी जलकुंभी

सागवाड़ा. नगर के गमरेश्वर तालाब और मसानिया तालाब में जमा जलकुंभी 6 .40 लाख रुपए में हटने लगी है। इन दोनों की तालाबों से जलकुंभी सफाई का कार्य भी शुरू कर दिया गया है। तालाबों की हालत दिन-ब-दिन खराब होने से नागरिकों की मांग पर कलेक्टर ने नगर परिषद को इनकी सफाई के निर्देश दिए थे।

नगर परिषद ने पूजा सेवा संस्थान सागवाड़ा को 18 दिसंबर, 13 को जलकुंभी हटाने के लिए वर्क आर्डर जारी किया था। इसके लिए 2.35 लाख रुपए खर्च होने थे। लेकिन काम सहीं नहीं होने पर पालिका ने संस्थान को नोटिस जारी करते हुए काम बंद करा दिया। इसके बाद नगर परिषद ने नए सीरे से टेंडर कर 6.40 लाख रुपए में अब तालाबों से जलकुंभी हटाने का कार्य किया जा रहा है।

परिंदों पर भी संकट

वर्तमान में गमरेश्वर तालाब जिले की सबसे बड़ी पक्षियों की प्रजनन स्थली है और यहां पर अभी दुर्लभ और खतरे के निकट माने जाने वाली कई प्रजातियों के पक्षी प्रजनन कर रहे हैं। इस तालाब के बीच स्थित बबूल के पेड़ों पर बड़ी संख्या में पेंटेड स्टॉक, डार्टर, हेरोन, ब्रैक नेक्ड स्टॉर्क और व्हाईट आईबीस पक्षियों ने प्राकृतिक आबोहवा माकूल होने की वजह से डेरा बनाया है।

रास्ता खुलवाने को अड़े ग्रामीण

हनुमानगढ़. गांव धोलीपाल में सोमवार को मंजूरशुदा रास्ता खुलवाने के लिए काश्तकारों ने विरोध किया। किसानों में इस बात को लेकर आक्रोश था कि रास्ता मंजूर होने के बावजूद इसे खुलवाया नहीं जा रहा। गिरदावर और पटवारी इसे खोल नहीं रहे हैं। किसान रामप्रताप, रामकुमार, लालचंद, बृजलाल, बद्रीप्रसाद, देवीलाल मूंड सहित कई किसान रास्ता खुलवाने के लिए अड़े रहे। यह रास्ता साढ़े 16 फीट जनहित के लिए स्वीकृत किया गया था। किसानों का आक्रोश देखते हुए तहसीलदार सुरेंद्र जाखड़ मौके पर पहुंचे और समझाइश की। साथ ही रास्ता खुलवाने का आश्वासन दिया। तहसीलदार ने बताया कि रास्ते में कई तरह की कानूनी अड़चन थी। इसलिए वह रास्ता नहीं खुल पा रहा था। अब उसे दूर किया जा रहा है। समझाइश के बाद किसान माने और शांत हुए।

फसलों की पैदावार बढ़ने की उम्मीद

डूंगरपुर. कृषि विभाग(रिसर्च) और सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग के संयुक्त प्रयासों से खेती और अच्छी होने की उम्मीद है। क्योकि दोनो विभागों ने जिले के प्रत्येक गांव से मिट्टी की जांच करवाकर इसकी प्रकृति को नक्शे पर उकेरा है। इससे किसानों की फसलों की पैदावार बढने की संभावना है। इस तकनीक से किसानों को सही जानकारी रहेगी कि उसके गांव से संबंधित खेत की मिट्टी में कौनसे पोषक तत्व की कमी है और कौनसे का अंधाधुंध उपयोग रूकेगा, वहीं उत्पादन भी बढने की संभावना है।

इससे पहले कृषि विभाग किसानों को ज्यादातर अनुमान के आधार पर पोषक तत्वों की पूर्ति करने की सलाह देता था और किसान उसी के अनुरुप खेती करते थे। मिट्टी जांच प्रयोगशाला के एआरओ के मुताबिक डूंगरपुर के अधिकांश क्षेत्रों में नाइट्रोजन की मात्रा कम है, फास्फोरस की मात्रा मध्यम है, जबकि पोटाश पर्याप्त मात्रा में है।

जिले के कई खेतों की मिट्टी में सूक्ष्म पोषक तत्वों जैसे जिंक, लोहा, तांबा व मैगनीज आदि

की भी कमी पाई गई है। नहर व ट्युबवेल सिंचित इलाके की मिट्टी क्षारिय है और इसका पीएच मान उच्च है। मिट्टी में जैविक कार्बन तत्व की काफी कमी है और किसान इसकी पूर्ति जैविक खाद से कर सकते है। इससे रासायनिक खाद के उपयोग में कमी लाई जा सकती है।

इस तरह तैयार हुए नक्शे

कृषि विभाग के तहत संचालित मिट्टी जांच प्रयोगशाला ने प्रदेश के हर क्षेत्र से मिट्टी और पानी के नमूने एकत्रित किए थे। विभागिय अधिकारियों के मुताबिक हर क्षेत्र से मिट्टी के दस-दस सैंपल लिए गए। इन सैंपल की जांच करके मिट्टी की प्रकृति तय की गई और पोषक तत्वों की मात्रा को नोट किया गया। प्रदेश के अलग-अलग जिलों में स्थित 30 मिट्टी जांच प्रयोगशालाओं से एकत्रित किए गए आंकडों को नक्शे का रूप दिया गया। इन्हे तैयार करने में रिमोट सेंसिग तकनीक का इस्तेमाल किया गया है। नक्शे के साथ एक टेबल बनाकर खाद के उपयोग के बारे में पूरी जानकारी दी गई है। नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम के साथ सूक्ष्म पोषक तत्वों की भी पूरी जानकारी दी गई।

सरकार की धीमी खरीददारी से मूंगफली व्यापारी को हजारों का नुकसान

बीकानेर। बीकानेर की कृषि मंडी में मूंगफली की आवक काफी ज़्यादा है और सरकार मूंगफली की खरीदी काफी धीमी गति से कर रही है नतीजतन पिछले 15 दिनों से मूंगफली से भरी सैकड़ों गाडियां सड़कों पर खड़ी है, जिससे किसान परेशान है. मूंगफली की खरीद को लेकर किसान काफी परेशान है. किसान को अपनी मूंगफली व्यापारियों को मज़बूरी में बेचने पड़ रही है, जिसमें उन्हें मूंगफली के भाव तीन हज़ार के आस पास मिलते हैं. जबकि सरकारी मूल्य 4000 प्रति क्विंटल है, इससे किसान के हजार रुपये के लगभग नुकसान होता है. किसानों का कहना है सरकार कि लापरवाही के चलते ऐसा हो रहा है.

मंडी में जहां मूंगफली रखने की जगह नहीं है, वही मंडी के बाहर सैकड़ों की संख्या में मूंगफली के भरे ट्रक खड़े है. सरकारी विभाग का कहना है वे खरीदारी तो कर रहे हैं, लेकिन उनके पास इसे रखने के लिए गोदाम नहीं है. 80 हज़ार मूंगफली की बोरियां सड़कों पर हैं सरकारी विभाग की इस नीति से किसानों की हज़ारों गाड़ियां अपनी मूंगफली बेचने को लेकर सड़कों पर खड़ी है और कोई सूरत में इस समस्या का समाधान नज़र नहीं आ रहा है.

S.S. AGRO (INDIA) MUMBAI

(DIRECT IMPORT FOR YOUR FERTILIZER/CHEMICALS)

- ZINK EDTA/COPPER EDTA/FE EDTA
- 100% WATER SOLUBLE FERTILIZER (NPK)
- HUMIC ACID
- SEAWEED EXTRACT
- AMINO ACID
- POTASSIUM HUMATE
- FULVIC ACID
- EDDHA
- NATCA
- BRASSINOLIDE
- DAP
- SODA ASH
- SODIUM SULPHIDE
- AMONIUM CLORIDE
- SODIUM BICARBONATE
- CALCIUM CARBIDE
- PHOSPHORIC ACID
- TRI SODIUM PHOSPHATE
- CITRIC ACID
- STPP

ALL KIND OF INORGANIC/ Organic Chemicals

CONTACT NO.-022-6710-3722

EMAIL:aarti@hindchem.com

विज्ञापन हेतु संपर्क करें

ममता (मुम्बई) 08898600347
गौतम राज सारस्वत (भायंदर)09987030599
महेन्द्र दधीच (जयपुर)09462392863
जयदीप माथुर (गुड़गाँव) 09928960900
दिलबाग सिंह बडेसरा (गुड़गाँव)09810026778

MANUFACTURER AND BULK SUPPLIER OF FERTILIZERS PRODUCTS

UDIT OVERSEAS PVT. LTD.

137, INDUSTRIAL AREA DEHRA, TEHSIL-CHOMU, DISTT. JAIPUR

Products Range:-

- Micronutrients
- Mixture
- Secondary Nutrients
- Growth Promoters
- Bio Stimulants
- Bio Fungicide
- Bio Insecticide
- Bactericide
- Wetting Agent
- Zyme
- Tonic

WE WELCOME YOUR INQUIRY

CONTACT DETAIL

MR. ALOK BENIWAL

MOB: 9660258447

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक-**सुरेश जी. शर्मा** की ओर से सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, गोरेगांव, पूर्व, मुंबई-62 से मुद्रीत किया और 307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064 यहां से प्रकाशित किया। संपादक-**सुरेश जी. शर्मा.**
contact Detail:Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908,**Cell**-9321758550,**Email:info@srushtiagronews.com**, **website:www.srushtiagronews.com**. **RNI No.MAHHIN/2013/49425**